मसनून दुआ़एं

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलँद शहरी

अल्लाह तआला का इरशाद है:

"मुझ से मांगो मैं तुम्हें अता करूंगा।"

मस्नून दुआएं

लेखक

हज़रत मौलाना आशिक़ इलाही बुलंदशहरी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

New Delhi - 110002

विषय सूची

अपनी बात

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ
نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّىۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम,

कुछ दोस्तों के उकसाने पर मजमूए में अह्कर ने सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वे दुआंए मय तर्जुमा दर्ज की हैं, जो वक़्त–वक़्त से मौक़ा और मक़ाम को देखते हुए आप अल्लाह के दरबार में पेश किया करते थे। इन दुआओं के मतलब पर, ग़ौर से मालूम होता है कि इनमें इस्लाम की बड़ी अहम तालीमात हैं और इनके मतलब में ग़ौर करके तौहीद की बुलंद

मंज़िलों तक पहुंचा जा सकता है।

चूंकि हर इन्सान खुदा का ही बन्दा है और जिन के ज़रिए बन्दे राहत व आराम पाते हैं, वे भी खुदा की ही मख़लूक़ हैं, इसलिए इंसान का फ़र्ज़ है कि वह हर राहत व सुकून को अल्लाह ही की तरफ़ से समझे और उनके मिलने पर अल्लाह ही का शुक्र अदा करे और हर वक़्त और हर मौक़े पर अल्लाह ही को याद करे और बार-बार अपनी गुलामी का और खुदा के माबूद होने का इक़रार करो। इन दुआओं में आप को जगह-जगह अल्लाह के एक होने, उसके मालिक होने और बन्दों की आजिज़ी का इज़हार मिलेगा और आप यक़ीन करेंगे कि दुनिया के हादी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया व आख़िरत की कोई ऐसी भलाई नही छोड़ी, जो अल्लाह से मांग न ली हो। उम्मत

को चाहिए कि इन दुआओं को याद करके मौके और जगह के लिहाज़ से इन्हें पढ़ा करें क्योंकि इनके पढ़ने में एक तो आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी है, जो ख़ुदा तक पहुंचने का बेहतर से बेहतर ज़रिया है।

दूसरे चूंकि इनके लफ़्ज़ खुद अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इलहाम फ़रमाये हैं, इसलिए यक़ीनी तौर पर मक़बूल व मुस्तजाब हैं।

कुछ अल्लाह वालों के बारे में मालूम हुआ है कि मस्नून दुआओं का विर्द रख कर ही अल्लाह को प्यारे हुए और उनको रियाज़त और मुजाहदे में जान खपाना न पड़ी।

इन दुआओं के अलावा आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और दुआएं भी हदीस की

किताबों में मिलती हैं जो तमाम दुनिया व आख़िरत की कामियाबियों को शामिल हैं और किसी मौक़े और जगह से मुताल्लिक़ नहीं हैं, जिनको मुल्ला अ़ली क़ारी रह० ने 'अल–हिज़्बुल आज़म' में और हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना थानवी क़ुद्दस सिर्रहू ने 'मुनाजाते मक़बूल' में जमा फ़रमा कर हफ़्ते भर की सात मंज़िलों पर तक़सीम कर दी हैं।

पढ़ने वालों को चाहिए कि 'अल–हिज़्बुल आज़म' या 'मुनाजाते मक़बूल' का भी विर्द रखें और इस किताब में दर्ज की हुई दुआ़ओं के पढ़ने की भी पाबंदी करें।

इस मज्मूए में लिखी हर दुआ़ अह्क़र ने हदीस की किताबों में देखकर नक़ल की है, सिर्फ़ सुनने पर या अपनी याद पर या किसी किताब से

नक़्ल पर भरोसा नहीं किया, इसी वजह से हर दुआ़ का हवाला भी लिख दिया है और दुआ़ओं में वे लफ़्ज़ नहीं लिखे जो ज़बानों पर मशहूर हैं, मगर हदीस में नहीं है।

साथ ही ऐसी दुआ़एं भी लिख दी हैं जो दुआ़ओं की आम किताबों में नहीं हैं, मगर हदीस में मौजूद हैं।

एक ख़ास बात इस मज्मूए की यह भी है कि दुआ़ओं की फ़ज़ीलत और सवाब और दुआ़ओं के साथ मौक़े और जगह के मस्नून आदाब भी लिख दिए हैं, कुछ उन दुआ़ओं को छोड़कर जो हज़रत सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से नक़्ल हुई हैं, इस मजमूए की तमाम दुआएं वही हैं, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ौल या अ़मल से ली गई हैं। जहां कहीं कोई दुआ़

किसी सहाबी रज़ि० से नक़ल की गई है, हाशिए में उनका नाम लिख दिया गया है।

—दुआओं का मुहताज

मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलंद शहरी—

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ

व का–ल रब्बुकुमुद अूनी अस्तजिब लकुम –अल मुअ़मिन आयत 60

'और तुम्हारे परवरदिगार ने फरमा दिया है कि मुझको पुकारो, मैं तुम्हारी दर्ख़्वास्त कुबूल करूंगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मस्नून दुआएं

1. जब सुबह हो तो यह दुआ पढ़े

اَصۡبَحۡنَا وَاَصۡبَحَ الۡمُلۡكُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ط
اَللّٰهُمَّ اِنِّيۡۤ اَسۡئَلُكَ خَيۡرَ هٰذَا الۡيَوۡمِ فَتۡحَهٗ وَنَصۡرَهٗ
وَنُوۡرَهٗ وَبَرَكَتَهٗ وَهُدَاهُ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ شَرِّ مَا فِيۡهِ
وَشَرِّ مَا بَعۡدَهٗ ط ——— (حصن عن ابی داؤد)

अस्बह्ना व अस्बहल मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलु-क खै-र

हाज़ल यौ मि फ़त्हहू व नस्रहू व नू–र हू व ब–र–क–तहू व हुदाहु व अऊज़ुबि–क मिन शर्रि मा फ़ीहि व शर्रिमा बअ्द हू०

–हिस्न अन अबिदाऊद

तर्जुमा–हम ने और सारे मुल्क ने अल्लाह ही के लिए सुबह की है जो पूरी दुनिया का रब है।

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस दिन की बेहतरी यानी इस दिन की फ़त्ह और मदद और इस दिन के नूर और बरकत और हिदायत का सवाल करता हूं और उन चीज़ों की बुराई से, जो उसमें हैं और जो उसके बाद होंगी, तेरी पनाह चाहता हूं।

या यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيٰى

وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ـــــــ (ترمذی)

अल्लहुम–म बि–के अस्बह्‌ना व बि–क अम्सैना व बि–क नह्‌या व बि–क नमूतु व इलैकल मसीरू० —तिर्मिज़ी

तर्जुमा–ऐ अल्लाह ! तेरी कुदरत से हम सुबह के वक़्त में दाख़िल हुए और तेरी क़ुदरत से हम शाम के वक़्त में दाख़िल हुए और तेरी क़ुदरत से हम जीते हैं, मरते हैं और तेरी तरफ़ जाना है।

2. जब सूरज निकले तो यह दुआ पढ़े।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَقَالَنَا يَوْمَنَا هٰذَا
وَلَمْ يُهْلِكْنَا بِذُنُوْبِنَا ـــــــ (مسلم)

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अक़ा–ल–न यौ–

म–ना हाज़ा व लम् यह्लिक्ना बिज़ुनुबिना॰

तर्जुमा–सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने आज के दिन हमें साफ़ रखा और गुनाहों की वजह से हमें हलाक न फ़रमाया।

3. जब शाम हो तो यह दुआ पढ़े

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ فَتْحَهَا وَنَصْرَهَا وَنُوْرَهَا وَبَرَكَتَهَا وَهُدَاهَا وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا ۔ (ابوداؤد)

अम्सैना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। अल्लाहुम–म इन्नी अस् अलु–क ख़ै–र हाज़िहिल्लैलति फ़त–ह हा व नस–रहा व नू–र हा व ब–र क–तहा व हुदाहा व अऊज़ु बि–क मिन शर्रि मा फ़ीहा व शर्रि मा बअ्–दहा

—अबूदाऊद

तर्जुमा—हमने और सारे मुल्क ने अल्लाह ही के लिए शाम की जो पूरी दुनिया का रब है, ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे उस रात की बेहतरी यानी उस रात की फ़त्ह और मदद और उस रात के नूर और बरकत और हिदायत का सवाल करता हूं और पनाह चाहता हूं तुझसे उन चीज़ों की बुराई से जो इस रात में हैं और जो इसके बाद होंगी।

या यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيٰى
وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ ــــــ (ترمذی)

अल्लाहुम—म बि—क अम्सैना व बि—क अस्बह्ना व बि—क नह्या व बि—क नमूतु व

इलैकन्नुशूर० —तिर्मिज़ी

तर्जुमा– ऐ अल्लाह ! हम तेरी क़ुदरत से शाम के वक़्त में दाख़िल हुए और तेरी क़ुदरत से सुबह के वक़्त में दाख़िल हुए और तेर क़ुदरत से जीते और मरते हैं और मरे पीछे जी उठकर तेरी ही तरफ़ जाना है।

4. मग़्रिब की अज़ान हो तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَآ اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ

وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْلِىْ ط —— (مشكوٰة)

अल्लाहुम–म इन–न हाज़ा इक़्बालु लैलि–क व इद्बारू नहारि–क व अस्वातु दुआ़ति–क फ़ग़्फ़िरली —मिश्कात

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! यह तेरी रात के आने और तेरे दिन के जाने का वक़्त है और तेरे पुकारने वालों की आवाज़ें हैं, सो तू मुझे बख़्श दे।

5. सुबह व शाम पढ़ने की कुछ और चीज़ें

1. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, जो बन्दा हर सुबह व शाम को तीन बार ये कलिमे—

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ۝

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुरू मअ़स्मिही शैउन फ़िल अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ वहुवस्समीअ़ुल अ़लीम०

तर्जुमा—अल्लाह के नाम से (हमने सुबह की या

शाम की,) जिसके नाम के साथ ज़मीन या असामान में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं दे सकती और वह सुनने वाला और जानने वाला है।

पढ़ लिया करे तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचाएगी। —तिर्मिज़ी

अबूदाऊद शरीफ़ की रिवायत में है कि सुबह को पढ़ लेने से शाम तक और शाम को पढ़ लेने से सुबह तक तो उसे कोई अचानक आ जाने वाली बला न पहुंचेगी। —मिश्कात

2. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह को (सूरः रूम, पारा 21 की) ये तीन आयतें—

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ

تُظْهِرُوْنَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ
تُخْرَجُوْنَ ○

फ़ सुब्हानल्लाहि ही–न तुम्सू–न व ही–न तुस्बिहू न व लहुल हमदु फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व अशीयंव–व–ही–न तुज़्हि रून युख़्रिजुल हय–य् मिनल मय्यिति व युख़्रिजुल मय्यि–त मिनल हिय्य व युहयिल अर–ज़ बअ़द मौ तिहा व कज़ालिक–क तुख़–रजून०

तर्जुमा–सो तुम अल्लाह की पाकी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त और तमाम आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए हम्द है और ज़वाल के बाद भी और ज़ुहर के वक़्त भी, वह जानदार को बे–जान से और बे–जान को

जानदार से बाहर लाता है और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िंदा करता है और इसी तरह तुम निकाले जाओगे।

पढ़ ले, तो उस दिन जो (वज़ीफ़ा वग़ैरह छूट जाएगा, उसका सवाब पा लेगा। जो शख़्स शाम को ये आयतें पढ़ ले, तो उस रात को, जो वज़ीफ़ा वग़ैरह छूट जाएगा, उसका सवाब पायेगा।

—अबूदाऊद

3. हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह को सूरः मोमिन (पारा 25) की शुरू की आयतें और आयतुलकुर्सी पढ़ ले, तो उनकी वजह से शाम तक (आफ़तों और ना-पसंदीदा बातों से) बचा रहेगा और जो इनको शाम के वक़्त पढ़े तो

सुबह तक बचा रहेगा।

सूरः मोमिन की शुरू की आयतें ये हैं

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ○

हामीम तंज़ीलुल किताबि मिनल्लाहिल अज़ीज़िल अलीम ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलि त्तौबि शदीदिल अिक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला–ह इल्ला हु–व इलैहिल मसीर०

तर्जुमा–हामीम, यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बर्दस्त है और हर चीज़ का जानने वाला है, गुनाहों का बख़्शने वाला और

तौबा का क़ुबूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला है, कुदरत वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, और उसी की तरफ़ जाना है।

6. आयतुल कुर्सी

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ
وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ
ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ
اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ
عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ
وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝

अल्लाहु ला इला–ह इल्लाहु–वल हय्युल क़य्यूम ला तअ् ख़ुज़ुहू सि–न तुंव–व ला नौम लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यशफ़उ अिन–द–हू इल्ला बिइज़्निही

यअ़्लमु मा बै–न ऐदीहिम व मा ख़ल–फ़ हुम व ला युहीतू–न बि शैइम मिन अ़िल्मिही इल्ला बि–मा शा–अ व सि–अ़ कुर्सिय्यु हुस्समावाति वल अर्ज़ वला यऊदु हू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीम०

तर्जुमा–अल्लाह (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िंदा है, दुनिया को क़ायम रखने वाला, न उसको ऊंघ दबा सकती है, न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है। कौन है जो उसकी जनाब में बग़ैर उसकी इजाज़त के सिफ़ारिश कर सके, वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व ग़ायब हालात को और उसकी मालूमात में से किसी भी चीज़ को अपने इल्म के एहाते में नहीं ला सकते, मगर जितना चाहे और उसकी कुर्सी ने तमाम आसमानों और ज़मीन को अपने अंदर ले रखा है और इन

दोनों की हिफ़ाज़त उस पर बोझ नहीं है और वह बुलंद और बड़ा है।

5. फ़रमाया अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जो शख़्स सुबह को यह पढ़ ले–

اَللّٰهُمَّ مَآ اَصْبَحَ بِیْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम–म मा अस्ब–ह बी मिन निअमतिन औ बि अ–ह दिम मिन खल्क़–क फ़मिन –क वह्द–क ला शरी–क ल–क फ़ ल–क–ल हमदु व ल–कश्शुक्रु०

तर्जुमा–ऐ अल्लाह ! इस सुबह के वक़्त जो भी कोई नेमत मुझ पर या किसी भी दूसरी मख़्लूक़ पर है; वह सिर्फ़ तेरी ही तरफ़ से है, तू तन्हा है, तेरा कोई शरीक नहीं, तेरे ही लिए तारीफ़ है

और तेरे ही लिए शुक्र है।

तो उसने उस दिन अल्लाह के इनामों का शुक्र अदा कर दिया और अगर शाम को कह ले तो उस रात के खुदा के इनामों का शुक्र अदा कर दिया। —अबूदाऊद, नसई, वग़ैरह

फ़ायदा—अगर शाम को पढ़े तो 'मा अस्ब-ह बी' की जगह 'मा अम्सा बी' कहे।

5. हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मुसलमान बन्दा सुबह व शाम तीन बार ये कलीमे—

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِيًّا

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन व बिल इस्लामि दीनंव व बि मुहम्मदिन नबिय्यन॰

तर्जुमा—मैं अल्लाह तआला को रब मानने पर

और इस्लाम को दीन मानने पर और मुहम्मद को नबी मानने पर राज़ी हूं।

पढ़ ले तो अल्लाह के ज़िम्मे होगा कि कि़यामत के दिन उसे राज़ी करे —तिर्मिज़ी

6. हज़रत मअ्क़ल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह को तीन बार

أَعُوذُ بِاللّٰهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ

अऊज़ु बिल्लाहि स्स मी अि ल अलीम मिन श्शैतानिर्रजीम०

पढ़कर सूरः हश्र की आख़िरी तीन आयतें—

هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ

الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۞ هُوَ اللّٰهُ
الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला ल इल्लाहु—व आलि मुलगैबि वश्शहादति हुवर्रह मानुर्रहीम हुवल्लाहुल्लज़ी लाइला—ह इल्ला हु—व अल—मलिकुल क़ुद्दूसुस्सलामुल मुअ् मिनुल मुहैमिनुल अज़ीज़ुलजब्बारूल मु—त कब्बिरू सुब्हानल्लाहि अम्मा युशिरकून हुवल्ला हुल ख़ालिक़ुल बारिउल मुसव्विरू लहुल अस्माउल हुस्ना युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम०

तर्जुमा—वह अल्लाह (ऐसा है) कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह गैब और छिपी बातों का जानने वाला है, वह रहमान व रहीम है। वह

अल्लाह (ऐसा है) कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बादशाह है, पाक है, सलामती वाला है, अम्न देने वाला है, निगहबानी करने वाला है, अज़ीज़ है जब्बार है, अज़्मत वाला है, अल्लाह उस शिर्क से पाक है, जो वे करते हैं, वह अल्लाह पैदा करने वाला है, ठीक-ठीक बनाने वाला है। उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं, जो भी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब उसकी तस्बीह बयान करती हैं और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

पढ़ ले तो उसके लिए अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा जो शाम तक उस पर रहमत भेजते रहेंगे और अगर उस दिन मर जाए तो शहीद मरेगा और जो शख़्स शाम को यह अमल करे तो उसके लिए अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देगा

जो उस पर सुबह तक रहमत भेजते रहेंगे और अगर उस रात मर जाएगा तो शहीद मरेगा।

—तिर्मिज़ी

7. हज़रत अता बिन अबी रिबाह ताबअ़ी रह० फ़रमाते हैं कि मुझे यह हदीस पहुंची है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स बहुत सुबह—सवेरे सूरः यासीन पढ़ ले, शाम तक की उसकी ज़रूरतें पूरी कर दी जाएंगी। —मिश्कात

फ़ायदा—सुबह—शाम तीन—तीन बार सूरः इख़्लास और 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़' और 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि' पढ़ने की फ़ज़ीलतें भी हदीस शरीफ़ में आयी हैं।

7. रात को पढ़ने की चीज़े

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स हर रात में सूरः ,वाक़िआ (पारा 27) पढ़ लिया करे, उसे कभी फ़ाक़ा न होगा। —बैहक़ी

2. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स आले इम्रान की आयतें इन–न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल अर्ज़ि, से आख़िर सूरः तक किसी रात को पढ़ ले तो उसे रात भर नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलेगा। —मिश्कात

3. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को जब तक सूरः आलिफ़–लाम–मीम सज्दा, जो 21 वें पारे में है और सूरः 'तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्कु' (पारा 21) न

पढ़ लेते थे, उस वक़्त तक न सोते थे।

—तिर्मिज़ी

4. और इसी सूरः तबारकल्लज़ी के बारे में आपने फ़रमाया कि एक शख़्स की सिफ़ारिश करके उसने बख़्शवा दिया। —मिश्कात

5. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सूरः बक़रः की आख़िरी दो आयतें (आ—म—नर्रसूलु से सूरः के ख़त्म तक) जो शख़्स किसी रात को पढ़ लेगा, तो ये दोनों आयतें उसके लिए काफ़ी होंगी, यानी वह हर बुराई और ना—पसंदीदा बात से बचा रहेगा।

—बुख़ारी व मुस्लिम

8. सोते वक़्त पढ़ने की चीज़ें

जब सोने का इरादा करे तो वुज़ू कर ले और अपने बिस्तर को तीन बार झाड़ ले, फिर दाहिनी करवट पर लेट कर सर या गाल के नीचे दाहिना हाथ रखकर यह दुआ तीन बार पढ़े।

—मिश्कात व हिस्न हसीन

اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَجْمَعُ عِبَادَكَ ۠ (بخاری ومسلم)

अल्लाहुम—म क़िनी अज़ा—ब—क यौ—म तज्मअु अिबा—द क० —बुख़ारी व मुस्लिम

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तु मुझे अपने अज़ाब से बचा, जिस दिन तू अपने बन्दों को जमा कर लेगा।

या यह दुआ पढ़े

بِاسْمِكَ رَبِّيْ وَضَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ اَرْفَعُهٗ اِنْ ۰

اَمْسَكْتَ نَفْسِيْ فَارْحَمْهَا وَاِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا
بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ ؕ (بخاری ومسلم)

बिस्मि–क रब्बी वज़अ्तु जंबी व बि क अर्फ़अुहू इन अम्सक–त नफ़्सी फ़र्हम्हा व इन अर्सल–तहा फ़ह्फ़ज़्हा बिमा तह्फ़ज़ु बिही अिबा–द–कस्सालिहीन० —बुख़ारी व मुस्लिम

तर्जुमा—ऐ मेरे परवरदिगार ! मैंने तेरा नाम लेकर अपना पहलू रखा और तेरी कुदरत से उसको उठाऊंगा। अगर तू (सोते मे) मेरे नफ़्स को रोक ले (यानी मुझे मौत दे दे) तो मेरे नफ़्स पर रहम करियो और अगर तू ज़िंदा छोड़ दे तो अपनी कुदरत के ज़रिए उसकी हिफ़ाज़त करियो, जिसके ज़रिए तू अपने नेक बंदों की हिफ़ाज़त करता है।

या यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى — (بخاری ومسلم)

अल्लाहुम-म बिस्मि-क अमूतु व अ़ह्या

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तेरा नाम लेकर मैं मरता और जीता हूं।

या यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِىْ اِلَيْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِىْ اِلَيْكَ
وَفَوَّضْتُ اَمْرِىْ اِلَيْكَ وَاَلْجَأْتُ ظَهْرِىْ اِلَيْكَ رَغْبَةً
وَّرَهْبَةً اِلَيْكَ لَامَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنْكَ اِلَّا اِلَيْكَ اٰمَنْتُ
بِكِتَابِكَ الَّذِىْ اَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِىْ اَرْسَلْتَ

अल्लाहुम-म अस्लम्तु नफ्सी इलै-क व वज्जहतु वज्ही इलै-क व फ़व्वज़्तु अम्री इलै-क व अल-जअ्तु ज़हरी इलै-क रग़्बतंव व रहबतन इलै-क ला मल् ज-अ व ला मन-ज-अ मिन-क

इल्ला इलै-क आमन्तु बिकिताबि कल्लज़ी अन्ज़ल-त व बि नबिय्यि-कल्लज़ी अर्सल-त०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैंने अपनी जान तेरे सुपुर्द की और तेरी तरफ़ अपना रुख़ किया और तुझी को अपना काम सौंपा और मैंने तेरा ही सहारा लिया, तेरी नेमतों का चाव रखते हुए और तुझसे डरते हुए, तेरे अलावा कोई पनाह की जगह और निजात की जगह नहीं। मैं तेरी किताब पर ईमान लाया, जो तूने नाज़िल फ़रमायी है और तेरे रसूल को मैंने माना, जिसे तूने भेजा है।

एक सहाबी रज़ि० को यह दुआ बताकर प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इसको पढ़ लेने के बाद अगर उसी रात को तुम्हारी मौत आ जाएगी तो 'दीने फ़ित्रत' पर मरोगे और अगर सुबह को ज़िंदा उठोगे तो तुमको

भलाई मिलेगी। —मिश्कात

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तूने अपने बिस्तर पर पहलू रखा और सूरः फ़ातिहा और सूरः कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ ली, तो मौत के अलावा तू हर चीज़ से निडर हो गया।

हिस्न (बज़्ज़ार)

एक सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे कुछ बताइए, जिसे (सोते वक़्त) पढ़ लूं, जबकि अपने बिस्तर पर लेटूं। हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सूरः क़ुल या अय्युहल काफ़िरून पढ़ो, क्योंकि इसमें शिर्क से बेज़ारी का एलान है।

—मिश्कात (तिर्मिज़ी)

कुछ हदीसों में है कि इसको पढ़ कर सो जाए यानी इसके पढ़ने के बाद किसी से न बोले।

—हिस्न

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर रात को जब सोने के लिए बिस्तर पर तशरीफ़ लाते सूरः 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' और सूरः 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़' और सूरः 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास' पढ़कर हाथ की दोनों हथेलियों पर इस तरह दम करते कि कुछ थूक के झाग भी निकल जाते। इसके बाद जहां तक मुम्किन हो सकता था, पूरे बदन पर दोनों हाथों को फेरते थे। तीन बार ऐसा ही करते और हाथ फेरते वक़्त सर और चेहरे और सामने के हिस्से से शुरू फ़रमाते। —बुख़ारी व मुस्लिम

इसके अलावा 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दु लिल्लाह, 34 बार अल्लाहु अक्बर भी पढ़े। —मिश्कात

और आयतुल कुर्सी भी पढ़े। इसके पढ़ने वाले के लिए अल्लाह की तरफ़ से रात भर एक हिफ़ाज़त करने वाला फ़रिश्ता मुक़र्रर रहेगा। कोई शैतान उसके पास न आयेगा।

—बुख़ारी

साथ ही यह भी तीन बार पढ़े

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

अस्तग़्फ़िरुल्लाह हल्लज़ी ला इला–ह इल्लहु

वल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैहि०

इसकी फ़ज़ीलत ये है कि रात को सोते वक़्त पढ़ने वाले के सारे गुनाह बख़्श दिये जाएंगे, भले ही समुद्र के झागों के बराबर हों।

फ़ायदा—रात को बिस्मिल्लाह पढ़कर दरवाज़े बन्द कर दो और 'बिस्मिल्लाह पढ़कर बर्तनों को ढक दो और सोते वक़्त चिराग़ बुझा दो, यानी जलता छोड़कर मत सोओ[1]।'

मिश्कात

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब इंसान अपने बिस्तर पर (सोने के लिए) पहुंचता है, तो एक फ़रिश्ता और एक शैतान उसकी तरफ़ लपकता है। शैतान कहता है कि अपनी बेदारी को बुराई पर ख़त्म

---

1. अगर ज़रूरत हो तो ज़ीरो बल्ब रात भर जला छोड़ने में कोई हरज नहीं।

कर और फ़रिश्ता कहता है कि भलाई पर ख़त्म कर, तो अगर अल्लाह की याद में लगा होने के बाद सोता है तो रात भर फ़रिश्ता उसकी हिफ़ाज़त करता है।

9. सोते वक़्त नींद न आने पर यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَأَتِ الْعُيُوْنُ وَاَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ لَّا تَاْخُذُكَ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ اَهْدِ لَيْلِيْ وَاَنِمْ عَيْنِيْ ۔ (حصن حصين)

अल्लाहुम्म–म ग़ार तिन्नुजूमु व ह–द–अतिल अुयूनु व अन–त हय्युन क़य्यूमुन ला तअ्ख़ुज़ु–क सि–न–तुंव व–वला नौमुन या हय्यु या क़य्यूमु अह्दि लैली व अनिम अ़ैनी० –हिस्न

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! सितारे दूर चले गये और

आंखों ने आराम लिया और तू ज़िंदा है और कायम रखने वाला है, तुझे न ऊंघ आती है, न नींद आती है। ऐ ज़िंदा और क़ायम रखने वाले ! इस रात को मुझे आराम दे और मेरी आंख को सुला दे।

10. सोते में डर, घबराहट या नींद उचटने पर

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ۔

अअूज़ु बिकलिमातिल्लाहि त्ताम्मति मिन ग़–जबिही व अिक़ाबिही व शर्रि अिबादिही व मिन–ह–म–ज़ातिश्शयातीनि व अंय्य ह्ज़ुरून॰

–हिस्न

तर्जुमा—अल्लाह तआला के पूरे कलिमों के वास्ते से मैं अल्लाह के ग़ज़ब से और उसके अज़ाब और उसके बन्दों की बुराई से और शैतानों के वस्वसों से और मेरे पास उनके आने से पनाह चाहता हूं।

फ़ायदा—जब ख़्वाब में अच्छी बात देखे तो 'अल् हम्दु लिल्लाह' कहे और इसे बयान कर दे, मगर उसी से कहे, जिससे अच्छे ताल्लुक़ात हो और आदमी समझदार हो (ताकि बुरा फ़ाल न बताए) और अगर बुरा ख़्वाब देखे तो अपनी बायीं तरफ़ तीन बार धुत्कार दे और करवट बदल दे या खड़ा होकर नमाज़ पढने लगे और तीन बार यूं कहे—

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ وَمِنْ شَرِّ هٰذِهِ الرُّؤْيَا ۝

अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम व मिन शर्रि हाज़ि हिर्रुअ् या०

तर्जुमा—मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं शैतान मर्दूद से और इसी ख़्वाब की बुराई से।

बुरे ख़्वाब को किसी से ज़िक्र न करे, ये सब अमल करने से वह ख़्वाब उसे कुछ नुक़्सान न पहुंचाएगा। —मिश्कात व हिस्न

तंबीह—अपनी तरफ़ से बनाकर झूठा ख़्वाब बयान करना सख़्त गुनाह है। —बुख़ारी

11. जो सो कर उठे तो यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ ــــــ (بخاری ومسلم)

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बअ्द

मा अमा–तना व इलैहिन्नुशूर०

–बुख़ारी व मुस्लिम

तर्जुमा—सब तारीफ़ें ख़ुदा के लिए हैं, जिसने हमें मारकर ज़िंदगी बख़्शी और हमको उसी की तरफ़ उठकर जाना है।

या यह पढ़े

○ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ یُحْیِ الْمَوْتٰی وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी युह्यिल मौता व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

तर्जुमा—सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो मुर्दों को ज़िंदा फ़रमाता है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

–हिस्न

12. जब तहज्जुद के लिए उठे तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ
مَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ
الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَقَوْلُكَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ
وَالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ
لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْكَ
اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْ لِيْ مَا
قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَنْتَ
اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ
اِلَّا اَنْتَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ ۔ —— (بخاری ومسلم)

अल्लाहुम्म–म लकल् हम्दु अन–त क़य्यिमु

स्समावाति वल अर्ज़ि व मन फ़ीहिन–न व लकल हम्दु अन–त नूरुस्समावाति वल अर्ज़ि व मन फ़ीहिन–न व लकल हम्दु अन–त मलिकुस्समावाति वल अर्ज़ि व मन फ़ीहिन–न व लकल हम्दु अन्तल हक़्कु व वअ़्–दु क हक़्कुन व लिक़ाउ–क हक़्कुन व क़ौलु–क हक़्कुन वल जन्नतु वन्नारु हक़्कुन व नन्बिय्यून हक़्कुन व मुहम्मदुन हक़्कुन वस्साअ़तु हक़्कुन अल्ला–हुम–म ल–क अस्लम्तु व बि–क आमन्तु व अ़लै–क तवक्कलतु व इलै–क अनब्तु व बि–क ख़ासम्तु व इलै–क हाकम्तु फ़ग़्फ़िर ली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़र्तु व मा असरर्तु व मा अअ़्लन्तु व मा अन–त अअ़्लमु बिही मिन्नी अन्–तल मुक़द्दिमु व अन्तल मुअख़्ख़िरु ला इलाह इल्ला अन–त व ला इला–ह ग़ैरु–क०

–बुख़ारी व मुस्लिम

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिए हम्द है, तू आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनमें है, उस सब का क़ायम रखने वाला है और तेरे ही लिए हम्द है। तू आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनमें है, उस सब का रोशन रखने वाला है और तेरे ही लिए हम्द है, तू आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनमें है उनका बादशाह है और तेरे ही लिए हम्द है, तू हक़ है, तेरा वायदा हक़ है और तेरी मुलाक़ात हक़ है और तेरी बात हक़ है और जन्नत हक़ है और दोज़ख़ हक़ है और सब नबी हक़ हैं और मुहम्मद सल्ल० हक़ हैं और क़ियामत हक़ है।

ऐ अल्लाह ! मैंने तेरी इताअत के लिए सर झुकाया और मैं तुझ पर ईमान लाया और मैंने तुझ पर भरोसा किया और मैं तेरी तरफ़

रूजूअ़ हुआ और तेरी क़ुव्वत से मैंने (दुश्मनों से) झगड़ा किया और तुझी को मैंने हाकिम बनाया, सो तू बख़्श दे मेरे अगले पिछले गुनाह और जो गुनाह मैंने छुपा कर या ज़ाहिरी तौर पर किये हैं और जिन गुनाहों को तू मुझसे ज़्यादा जानता है, तू ही आगे बढ़ाने वाला है। और तू ही पीछे हटाने वाला है, माबूद सिर्फ़ तू ही है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

और आसमान की तरफ़ मुंह उठाकर सूरः आले इम्रान का पूरा आख़िरी रूकूअ़ भी 'इन–न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति' से ख़त्म सूरः तक पढ़े– और दस बार अल्लाहु अक्बर– और दस बार अल् हम्दु लिल्लाह–और दस बार 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' और दस बार 'सुब्हानल मलिकिल क़ुद्दूस–और दस बार 'अस्तग़्फ़िरूल्लाह'–और

दस बार कलिमा तय्यिबा 'ला इला–ह इल्लल्लाह–और दस बार यह दुआ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ ضِيْقِ الدُّنْيَا وَضِيْقِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ط (مشکوٰۃ، ابوداؤد)

अल्लाहुम्म–म इन्नी अअूज़ुबि–क मिन ज़ीकि़द दुन्या व ज़ीकि यौ मिल कि़यामति०

–मिश्कात (अबूदाऊद)

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं दुनिया की तंगी से और कि़यामत के दिन की तंगी से। फिर नमाज़ शुरू करे।

13. पाख़ाने से पहले और बाद की दुआ

जब पाख़ाने जाए तो दाख़िल होने से पहले 'बिस्मिल्लाह' कहे (हदीस शरीफ़ में है कि

शैतान की आंखों और इंसान की शर्मगाहों के दर्मियान 'बिस्मिल्लाह' आड़ बन जाती है) और यह दुआ पढ़े।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ

अल्लाहु म–म इन्नी अऊ़ज़ु बि–क मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाइसि

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं ख़बीस जिन्नों से मर्द हों या औरत।

जब पाख़ाने से निकले तो 'गुफ़रा–न–क' कहे और यह दुआ पढ़े–

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْٓ اَذْھَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ (مشکوٰۃ)

अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्–ह–ब अ़न्निल अज़ा व आ़ फ़ानी० —मिश्कात

तर्जुमा—सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने मुझसे ईज़ा देने वाली चीज़ दूर की और मुझे चैन दिया।

'गुफ़रा–न–क' यानी ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे बख़्शिश का सवाल करता हूं।'

14. वुज़ू करना

जब वुज़ू करना शुरू करे तो पहले

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

'बिस्मिल्लहिर्रहमानिर्रहीम' कहे[1]। यानी 'शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान निहायत ही रहम वाला है।'

कुछ हदीसों में आया है कि उसका वुज़ू ही नहीं, जिसने 'बिस्मिल्लाह' न पढ़ी हो। (मिश्कात)

---

1. हदीस शरीफ़ में वुज़ू के शुरू में 'अल्लाह' का नाम लेना आया है, उसके लफ़्ज़ नहीं आए। कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि 'बिस्मिल्लाह' पढ़ ले।

15. वुज़ू के दर्मियान यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ
وَبَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ ـــ (حصن، نسائی)

अल्लाहुम-मग़्फ़िर ली ज़ंबी व वस्सि-अ़ ली फ़ी दारी व बारिक ली फ़ी रिज़्क़ी०

—हिस्न नसई

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे (क़ब्र के) घर को फैला और मेरी रोज़ी में बरकत दे।

16. जब वुज़ू कर चुके तो आसमान की तरफ़ मुंह करके यह दुआ पढ़ें

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अशहदुअल्लाह इला–ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी–क लहू व अश्हदू अन–प मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलु हू०

तर्जुमा—मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

इस दुआ को वुज़ू के बाद पढ़ने से पढ़ने वाले के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो। —मिश्कात

कुछ रिवायतों में इसको वुज़ू के बाद तीन बार पढ़ना आया है। —हिस्ने हसीन

फिर यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

अल्लाहुम-मज अ़ल्नी मिनत्तव्वाबीन वजअ़ल-नी मिनल मु-त-तह्हिरीन०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मुझे बहुत तौबा करने वालों में और बहुत पाक रहने वालों में शामिल फ़रमा।—हिस्न

और यह दुआ़ भी पढ़े

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا
اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ (حصن عن المستدرک)

सुब्हान-क-ल्लाहुम-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्ला-इला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क —हिस्न (मुस्तद्रक)

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू पाक है और मैं तेरी तारीफ़ बयान करता हूं। मैं गवाही देता हूं कि सिर्फ़ तू ही माबूद है और मैं तुझसे मग़्फ़िरत चाहता हूं और तेरे सामने तौबा करता हूं।

17. जब सुबह की नमाज़ के बाद लिए निकले तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا
وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّمِيْنِيْ نُوْرًا
وَّعَنْ شِمَالِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّيْ نُوْرًا
وَّفِيْ عَصَبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ لَحْمِيْ نُوْرًا
وَّفِيْ دَمِيْ نُوْرًا وَّفِيْ شَعْرِيْ نُوْرًا
وَّفِيْ بَشَرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ لِسَانِيْ نُوْرًا
وَّاجْعَلْ فِيْ نَفْسِيْ نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِيْ نُوْرًا
وَّاجْعَلْنِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ خَلْفِيْ نُوْرًا
وَّمِنْ اَمَامِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ فَوْقِيْ نُوْرًا
وَّمِنْ تَحْتِيْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ نُوْرًا ۔ (حصن حصين)

अल्लाहुम-मज-अ़ल फ़ी क़ल्बी नूरंव-व फ़ी ब-स-री नूरंव व फ़ी समअ़ी नूरंव-व अ़न यमीनी

नूरंव–व अ़न शिमाली नूरंव व जअ़ल ली नूरंव व फ़ी अ़–स–बी नूरंव–व फ़ी लहमी नूरंव–व फ़ी दमी नूरंव–व फ़ी शअ़ री नूरंव–व फ़ी ब–श–री नूरंव–व फ़ी लिसानी नूरंव–व जअ़ल फ़ी नफ़्सी नूरंव–व अअ़्ज़िम ली नूरंव–वज–अ़ल्नी नूरंव–वज–अ़ल मिन ख़ल्फ़ी नूरंव–व मिन० अमामी नूरंव–वजअ़ल मिन फ़ौक़ी नूरंव मिन तहती नूरन अल्लाहुम–म अअ़्तिनी नूरन० –हिस्न हसीन

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मेरे दिल में नूर कर दे और मेरी आंखों में नूर कर दे और मेरे कानों में नूर कर दे और मेरे दाएं नूर कर दे और मेरे बाएं नूर कर दे और मेरे लिए नूर मुक़र्रर कर दे और मेरे पट्ठों में नूर कर दे और मेरे गोश्त में नूर कर दे और मेरे ख़ून में नूर कर दे और मेरे बालों में नूर कर दे और मेरी खाल में नूर कर दे और

मेरी ज़बान में नूर कर दे और मेरे नफ़्स में नूर कर दे और मेरे लिए बड़ा नूर मुक़र्रर कर दे और मुझे नूर कर दे और मेरे पीछे नूर कर दे और मेरे आगे नूर कर दे और मेरे ऊपर नूर कर दे और मेरे नीचे नूर कर दे। ऐ अल्लाह ! मुझे नूर इनायत फ़रमा।

18. मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

जब मस्जिद में दाख़िल हो तो पहले हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद शरीफ़ और सलाम भेजकर यह पढ़े।

رَبِّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ (مشكوٰة)

रब्बिग़्फ़िर ली ज़ुनूबी वफ़्तह ली अब्वा–ब रह्मति–क —मिश्कात

तर्जुमा—ऐ रब ! मेरे गुनाहों को बख़्श दे और

मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।'

या या दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ؕ مسلم

अल्लाहुम–मफ़्तह ली अब्वा–ब रहमति–क

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

नमाज़ के अलावा मस्जिद में यह पढ़ते रहे।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

(مشکوٰۃ باب المساجد)

सुब्हानल्लाहि व ल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर०

—मिश्कात

तर्जुमा—अल्लाह पाक है और सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है।

19. मस्जिद से निकले तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद व सलाम के बाद यह पढ़े

رَبِّ اغْفِرْ لِي ذُنُوْبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ ــــــــــ (مشكوة)

रब्बिग़्फ़िरली ज़ुनूबी वफ़्तह्ली अब्वाब फ़ज़्लि–क० –मिश्कात

तर्जुमा—ऐ मेरे रब ! मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरे लिए अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दे।

या यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ ــــــــ (مسلم)

अल्लाहुम–म इन्नी अस् अलु–क मिन

फ़ज़्लि-क

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूं।

20. जब अज़ान की आवाज़ सुने तो यह पढ़े

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا ؕ

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन व बिमुहम्मदिन रसूलन व बिल इस्लामि दीनन०

तर्जुमा—मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा

कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं और यह भी गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० उसके बंदे और रसूल हैं। मैं अल्लाह को रब मानने पर और मुहम्मद सल्ल० को रसूल मानने पर और इस्लाम को दीन मानने पर राज़ी हूं।

हदीस शरीफ़ में है कि अज़ान की आवाज़ सुनकर जो शख़्स इसको पढ़े, उसके गुनाह बख़्श दिए जाएंगे। —मुस्लिम

हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स अज़ान देने वाले का जवाब दे, उसके लिए जन्नत है। —हिस्न

इसलिए मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाले) का जवाब दे, यानी जो मुअज़्ज़िन कहे वही कहता जाए, हय्–य अलस्सलाहः और हय्–य अ़लल् फ़लाह के जवाब में 'ला हौ–ल व ला क़ुव्वतः

इल्ला बिल्लाहि कहे। —मिश्कात

21. अज़ान के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ
اٰتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا
مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (مشکوة)

अल्लाहुम—म रब—ब हाज़ि हिद्दअ्वति त्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल वसी—ल—त वल् फ़ज़ी—ल—तवब अ़स्द मक़ामम महमूद—निल्लज़ी वअ़त्तहू इन्—न—क ला तुख़्लिफ़ुल मीअ़ाद० ।[1] —मिश्कात

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इस पूरी पुकार के रब और क़ायम होने वाली नमाज़ के रब, मुहम्मद (सल्लल्लाहु

---

1. फ़ायदा—अज़ान की दुआमें लफ़्ज़ 'व अ़त्तहू' तक बुख़ारी वग़ैरह की रिवायत है और इसके बाद जो लफ़्ज़ है, वे बैहक़ी की 'सुनने कबीर'में है —हिस्न

अलैहि व सल्लम) का वसीला अता फ़रमा, (जो जन्नत का एक दर्जा है) और उनको फ़ज़ीलत अता फ़रमा और उनको मक़ामे महमूद पर पहुंचा, जिसका तूने उनसे वायदा फ़रमाया है। बेशक तू वायदा ख़िलाफ़ नहीं फ़रमाता।

इसके पढ़ लेने से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शफ़ाअत वाजिब हो जाती है। —मिश्कात

फ़ायदा—जो लफ़्ज़ अज़ान के जवाब में कहे, वही 'इक़ामत' के जवाब में कहे और जब 'क़द–क़ा–म तिस्सलाः' सुने तो यों कहे—

أَقَامَهَا اللّٰهُ وَأَدَامَهَا ——— (مشكوة)

अक़ा–महल्लाहु व अदा–महा —मिश्कात

तर्जुमा—अल्लाह इसे (यानी नमाज़ को) क़ायम

हमेशा रखे।

22. फ़र्ज़ नमाज़ का सलाम फेर कर दाहिना हाथ माथे पर फेरते हुए पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इला–ह इल्ला हु वर्रहमानुर्रहीम अल्लाहुम–म अज़्हि–ब अ़न्नि ल ह म–म वल–हुज़–न

तर्जुमा—मैंने अल्लाह के नाम के साथ नमाज़ ख़त्म की, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं (और) जो रहमान को रहीम है। ऐ अल्लाह ! तू मुझसे फ़िक्र और रंज दूर कर दे। —हिस्न हसीन

और तीन बार अस्तग़्फ़िरुल्लाह

कह कर यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ
تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

अल्लाहुम–म अन्तस्सलामु व मिन्कस्स्लामु तबारक–त या ज़ल जलालि वल् इक्रामि[1]।

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू सलामन रहने वाला है, और तुझ ही से सलामती मिल सकती है, तू बरकत वाला है, ऐ बुजुर्गी और अज़्मत वाले

—मुस्लिम

और इन दुआओं में से सब या कोई एक पढ़े

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

---

1 इस दुआ में कुछ कलिमे जो और मशहूर हैं, वे साबित नहीं।

اَلْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ○ (بخاری ومسلم)

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी–क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर○— बुख़ारी व मुस्लिम

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो तन्हा है और जिसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ — (بخاری ومسلم)

अल्लाहुम–म ला मानि–अ़ लिमा अअ्‌ तै–त व ला मुअ्‌ ति–य लिमा मनअ़–त व ला यन्फ़उ़ ज़ल जद्दि मिन–कल जद्दु○ —बुख़ारी व मुस्लिम

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! जो तू दे, उसका कोई

रोकने वाला नहीं और जो तू रोके, उसका कोई देने वाला नहीं और किसी मालदार को तेरे अज़ाब से मालदारी नहीं बचा सकती।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ — (بخاری)

अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिनल जुब्नि व अऊज़ु बि-क मिनल बुख़्लि व अऊज़ु बि-क मिन अर्ज़लिल उ़मुरि व अऊज़ु बि-क मिन फ़ित्नतिद्दुन्या व अज़ाबिल क़ब्रि०

—बुख़ारी

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं बुज़दिली से और तेरी पनाह चाहता हूं कंजूसी से और तेरी पनाह चाहता हूं निकम्मी उम्र से

और तेरी पनाह चाहता हूं दुनिया के फ़िल्ने से और तेरी पनाह चाहता हूं क़ब्र के अज़ाब से।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ ؕ
اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَاۤ اَخَّرْتُ وَمَاۤ اَسْرَرْتُ وَمَا
اَعْلَنْتُ وَمَاۤ اَسْرَفْتُ وَمَاۤ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْۤ اَنْتَ
الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ ؕ (ابوداؤد وغیرہ)

अल्लाहुम–म इन्नी अअूज़ु बि–क मिनल कुफ़्रि वल फ़क़्रि व अज़ाबिल क़ब्रि अल्लाहुम–मग़्फ़िर ली मा क़द्दम्तु व मा अख़्ख़र्तु व मा अस्रर्तु व मा अअ्लन्तु व मा अस्रफ़्तु व मा अन–त अअ्लमु बिही मिन्नी अन्तल मुक़द्दिमु व अन्तल मुअख़्ख़िरू ला इला–ह इल्ला अनत —अबूदाऊद वग़ैरह

ऐ अल्लाह ! मैं कुफ़्र से और तंगदस्ती से और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूं।

ऐ अल्लाह ! मेरे अगले-पिछले गुनाह और वे गुनाह, जो छुपे तौर पर किये और ज़ाहिरी तौर पर किये, सबको बख़्श दे और मेरे हद से बढ़ जाने को भी माफ़ फ़रमा दे और उन गुनाहों को बख़्श दे, जिन को तू मुझसे ज़्यादा जानता है, तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे हटाने वाला है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ ؕ (ابوداؤد)

अल्लाहुम-म अअिन्नी अ़ला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि अ़ि बादति-क० -अबूदाऊद

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मेरी मदद फ़रमा कि मैं तेरा ज़िक्र करूं और तेरा शुक्र करूं और तेरी अच्छी इबादत करूं।

फ़ायदा—हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद जो

शख़्स आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करे, उसके बारे में हदीस शरीफ़ में इर्शाद है कि ऐसे शख़्स को जन्नत के दाख़िले से सिर्फ़ मौत ही रोके हुए है
—बैहक़ी

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे हुक्म दिया कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद मुअव्वज़ात यानी 'क़ुल या अय्युहल काफ़िरून' और 'क़ुल हुवल्लाहु अहद' और सूर: 'क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ व क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि' पढ़ा करूं। —मिश्कात

फ़ायदा—हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 33 बार—सुब्हानल्लाह' और 33 बार अल् हम्दु लिल्लाह और 34 बार 'अल्लाहु अक्बर' पढ़ने की बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत हदीसों में आयी है और इसके

पढ़ने का एक तरीक़ा यह है कि तीनों को 33 बार पढ़े और पूरा सौ करने के लिए एक बार यह कलिमा पढ़ ले–

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ○

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरी–क लहू लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

तीसरा तरीक़ा यह है कि 25, 25 बार सुब्हानल्लाह, अलहम्दु लिल्लाह और अल्लाहु अक्बर कहे और 25 बार ला इला–ह इल्लल्लाह कह ले। (ये सब रिवायतें मिश्कात में हैं।)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से

रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि कौन सी दुआ़ क़ुबूलियत का दर्जा सबसे ज़्यादा रखती है ? इसके जवाब में आपने फ़रमाया कि जो दुआ़ रात के पिछले हिस्से में (यानी तहज्जुद के वक़्त) और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद हो। —तिर्मिज़ी

23. वित्र नमाज़ के बाद तीन बार यह दुआ़ पढ़े

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ

सुब्हानल मलि किल क़ुद्दूस

तर्जुमा—पाकी बयान करता हूं बादशाह की यानी अल्लाह की जो पाक है।

तीसरी बार आवाज़ से कहे और क़ुद्दूस की द को ख़ूब खींचे। —हिस्न हसीन

और यह भी पढ़े–

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ سَخَطِكَ بِرِضَاكَ وَ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَآ اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَیْكَ اَنْتَ كَمَآ اَثْنَیْتَ عَلٰی نَفْسِكَ

(حِصن حصین)

अल्लाहुम–म इन्नी अऊज़ुबि–क मिन स–ख–ति–क बि रिज़ाक व बि–मु आफ़ाति–क मिन अुक़ूबति–क व अऊज़ु बि–क मिन–क ला उहसी स ना अन अ़लै–क अन–त कमा अस्नै–त अ़ला नफ़्सि–क० हिस्ने हसीन

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! आपकी रिज़ा के वास्ते से, आपकी नाराज़ी से, और आपकी माफ़ी के वास्ते से, आपकी सज़ा से, मैं पनाह चाहता हूं और आपकी भेजी हुई मुसीबतों और अज़ाबों से

(आपकी) पनाह चाहता हूं। मैं आपकी ऐसी तारीफ़ नहीं कर सकता, जैसी अपनी तारीफ़ खुद आपने की है।' —हिस्न हसीन

24. चाश्त की नमाज़ पढ़ कर यह दुआ पढ़े

"اَللّٰھُمَّ بِكَ اُحَاوِلُ وَبِكَ اُصَاوِلُ وَبِكَ اُقَاتِلُ"

(حصن حصین) ———

अल्लाहुम–म बि–क उहाविलु व बि–क उसाविलु व बिक उक़ातिलु॰ —हिस्ने हसीन

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तुझी से अपने मक़ासिद की कामियाबी तलब करता हूं और तेरी ही मदद से दुश्मनों पर हमला करता हूं और तेरी ही मदद से जिहाद करता हूं।

25. नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े

मग़्रिब के बाद पढ़े

हज़रत मुस्लिम तमीमी रज़ियल्लाहु अन्हु से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मग़्रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा कहो—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम–म अजिर्नी मिनन्नारि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मुझे दोज़ख़ से महफ़ूज़ रखियो।'

जब तुम उसको कह लोगे और उसी रात को तुम्हारी मौत आ जाएगी तो दोज़ख़ से बचे रहोगे और अगर इस दुआ को सात बार फ़ज्र की नमाज़ के बाद किसी से बात किये बग़ैर कह लोगे और उस दिन मर जाओगे, तो दोज़ख़ से

बचे रहोगे। —मिश्कात (अबूदाऊद)

दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि फ़जर और मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद इसी तरह तशह्हुद की हालत में बैठे हुए जो शख़्स दस बार यह पढ़ ले—

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○

ला इला—ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी—क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु बियदिहिल ख़ैरु युह्यी व युमीतु—व हु—व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए

मुल्क है और उसी के लिए सब तारीफ़ है। उसी के हाथ भलाई है। वह ज़िंदा करता है और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

तो उसके लिए हर बार के बदले दस नेकियां लिखी जाएंगी और उसके दस गुनाह नामा–ए–आमाल से मिटा दिए जाएंगे और उसके दस दर्जे बुलन्द कर दिए जाएंगे और हर बुरी चीज़ से और शैताने मर्दूद से बचा रहेगा और शिर्क के सिवा कोई गुनाह उसे हलाक न कर सकेगा और वह अमल के एतबार से सब लोगों से अफ़्ज़ल रहेगा। हां, अगर कोई आदमी उससे ज़्यादा पढ़कर आगे बढ़ जाए तो और बात है।

मिश्कात (अहमद)

26. जब घर में दाख़िल हो

तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

अल्लाहुम–म इन्नी असअलु–क खैरल मौलजि व ख़ैरल मख़रजि बिस्मिल्लाहि व लज्ना व बिस्मिल्लाहि खरज्ना व अलल्लाहि रब्बिना तवक्कल्ना०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे अच्छा दाख़िल होना और अच्छा बाहर जाना मांगता हूं। हम अल्लाह का नाम लेकर दाख़िल हुए और अल्लाह का नाम लेकर निकले और हमने अल्लाह पर भरोसा किया, जो हमारा रब है।

इसके बाद अपने घरवालों को सलाम करे।

—मिश्कात

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब इंसान अपने घर में दाख़िल होकर अल्लाह का ज़िक्र करे और खाने के वक़्त (भी) अल्लाह का ज़िक्र करे तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि यहां न रात को रह सकते हो, न इन लोगों के रात के खाने में से कुछ खा सकते हो और अगर घर में दाख़िल होते वक़्त अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि यहां तुम्हें रात को रहने का मौक़ा मिल गया और अगर खाने के वक़्त अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया तो शैतान अपने साथियों से कहता है कि यहां तुम्हें रात को रहने के साथ

खाना भी मिल गया। —मिश्कात

27. जब घर से निकले तो यह दुआ पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْتُ وَتَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ
لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ (ترمذی)

बिस्मिल्लाहि ख़रजतु व तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हौ–ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि०
—तिर्मिज़ी

तर्जुमा—मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, गुनाहों से बचाना और नेकियों की ताक़त देना अल्लाह ही की तरफ़ से है।

हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स घर से निकलकर इसको पढ़े तो उसको (छुपे तौर पर) आवाज़ दी जाती है कि तेरी ज़रूरतें पूरी होंगी

और तू नुक़सान से बचा रहेगा और इन लफ़्ज़ों को सुनकर शैतान वहां से हट जाता है, यानी उसको बहकाने और तक्लीफ़ देने से रूक जाता है।

—तिर्मिज़ी

और आसमान की तरफ़ मुंह उठा कर पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اَظْلِمَ
اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَیَّ — (مشكوٰة)

अल्लाहुम-म इन्नी अऊ़ज़ु बि-क अन अज़िल-ल औ उज़ल-ल औ अज़्लि-म औ उज़्लम औ अज्ह-ल औ युज्ह-ल अ़ल य-य०

—मिश्कात

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि गुमराह हो जाऊं या गुमराह कर दिया

जाऊं या ज़ुल्म करूं या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए या जिहालत करूं, या मुझ पर जिहालत की जाए।

28. जब बाज़ार में दाख़िल हो तो यह पढ़े

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्द हू ला शरी–क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह यी–व युमीतु व हु–व हय्युन ला यमूतु बि–य–दि–हिल ख़ैरू व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी का मुल्क है और उसके लिए हम्द है, वह ज़िंदा करता है

और मारता है और वह खुद जिंदा है, उसे मौत न आएगी, उसके हाथ में भलाई है और वह हर चीज़ पर कादिर है।

हदीस शरीफ़ में है कि बाज़ार में उसके पढ़ने से अल्लाह तआ़ला दस लाख नेकियां लिख देंगे और दस लाख गुनाह माफ़ फ़रमा देंगे और दस लाख दर्जे बुलंद फ़रमा देंगे, और उसके लिए जन्नत में एक घर बना देंगे।

—तिर्मिज़ी व इब्ने माजा

29. अगर बाज़ार में कुछ बेचना या ख़रीदना हो तो यह पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَ هٰذِهِ السُّوْقِ وَخَیْرَ

مَا فِیْهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ

أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أُصِيْبَ فِيْهَا يَمِيْنًا فَاجِرَةً أَوْ صَفْقَةً خَاسِرَةً

बिस्मिल्लाहि अल्ला हुम–म इन्नी असअलु–क खै–र हाज़िहिस्सूकि व ख़ै–र मा फ़ीहा व अऊज़ु बि–क मिन शर्रि हा–व शर्रि मा फ़ीहा अल्लाहुम–म इन्नी अऊज़ु बि–क अन उसीब फ़ीहा यमीनन फाजि–र–तन औ सफ़्क़तन ख़ासिरतन[1]०

तर्जुमा—मैं अल्लाह का नाम लेकर दाख़िल हुआ। ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस बाज़ार की और जो कुछ इस बाज़ार में है, उसकी भलाई तलब करता हूं और तेरी पनाह चाहता हूं इस बाज़ार की बुराई से और जो कुछ इस बाज़ार में है उसकी बुराई से। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं इस बात से कि यहां झूठी क़सम खाऊं या मामले में टोटा उठाऊं।

फ़ायदा—बाज़ार से वापस आने के बाद

कुरआन शरीफ़ की दस आयतें कहीं से पढ़े।

—हिस्न (तबरानी)

30. जब खाना शुरू करे तो यह पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व अला ब–र–कतिल्लाह

—मुस्तदरक

तर्जुमा—मैंने अल्लाह के नाम से और अल्लाह की बरकत पर खाना शुरू किया।

बिस्मिल्लाह याद आने पर पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ ——— (ترمذی)

बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आख़ि रहू०

—तिर्मिज़ी

तर्जुमा—मैंने इसके अव्वल व आख़िर में अल्लाह का नाम लिया

फ़ायदा—खाने पर 'बिस्मिल्लाह' न पढ़ी जाए तो शैतान को उसमें साथ खाने का मौक़ा मिल जाता है। —मिश्कात

31. जब खाना खा चुके तो यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا

مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ○ ———— (ابن السُّنّی)

अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत–अ़–म–ना व सक़ाना व ज–अ–ल–ना मिनल मुस्लिमीन०

तर्जुमा—सब तारीफ़ें ख़ुदा के लिए हैं, जिसने हमें खिलाया और पिलाया और मुसलमान बनाया —इब्नुस्सुन्ना

या यह पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ ھُوَ اَشْبَعَنَا وَاَرْوٰنَا وَاَنْعَمَ عَلَیْنَا وَاَفْضَلَ

अल् हम्दु लिल्ला हिल्लजी हु–व अश–ब–अ़–ना व अर्वाना व अन–अ़–म अ़लैना व अफ़–ज़–ल०

तर्जुमा—सब तारीफ़ें ख़ुदा ही के लिए हैं, जिसने हमारा पेट भरा और हमें सेराब किया और हमें इनाम दिया और बहुत दिया।

खाना खाने के शुरू में 'बिस्मिल्लाहि व अ़ला ब–र–कतिल्लाहि' और आख़िर में इस दुआ के पढ़ लेने से क़ियामत के दिन इस खाने की पूछ न होगी। —हिस्न (हाकिम)

या यह पढ़े

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَاَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ

अल्लाहुम–म बारिक लना फ़ीहि व अत्‌अिम्ना ख़ैरम मिन्हु० —तिर्मिज़ी

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू हमें इसमें बरकत फ़रमा और इससे बेहतर नसीब फ़रमा।

या यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ ط

अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत अ–म–नी हाज़त्तआ–म व र–ज–क़नीहि मिर ग़ैरि हौलिम मिन्नी व ला क़ुव्वतिन०

तर्जुमा—सब तारीफ़ें ख़ुदा ही के लिए हैं, जिसने मुझे यह खाना खिलाया और मुझे नसीब किया बग़ैर मेरी ताक़त और कोशिश के।

खाने के बाद इसको पढ़ लेने से पिछले

गुनाह माफ़ हो जाते हैं। —मिश्कात

32. जब दस्तरख़्वान उठने लगे तो यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا ـــــ (بخاری)

अल् हम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तय्यिबम मुबा–र–कन फ़ीहि ग़ै–र मुक्फ़ीयिन व ला मुवद्दअ़िन व ला मुस्तग़्नन अ़न्हु रब्बना० —बुख़ारी

तर्जुमा—सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, ऐसी तारीफ़ जो बहुत हो और पाकीज़ा हो और बरकत वाली हो, ऐ हमारे रब ! हम इस खाने को काफ़ी समझ कर या बिल्कुल रुख़्सत कर के या उससे ग़ैर–मुहताज होकर नहीं उठा रहे हैं।

33. दूध पीकर यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ ــــــ (ترمذی)

अल्लाहुम–म बारिक लना फ़ीहि व ज़िद ना मिन्हु —तिर्मिज़ी

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू इसमें हमें बरकत दे और हमको और ज़्यादा दे।

34. जब किसी के यहां दावत खाये तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

अल्लाहुम–म अतअ़िम मन अत–अ–म–नी वस्क़ि मन सकानी० —मुस्लिम

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! जिस ने मुझे खिलाया तू उसे खिला और जिसने मुझे पिलाया, तू उसे पिला। मुस्लिम

या यह पढ़े

اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰئِكَةُ ؕ

अफ़—त—र अ़िन्दकुमुस्साइमून० व—अ—क—ल तआ़—म—कुमुल अब्रारू व सल्लत अ़लैकुमुल मलाइकतु०

तर्जुमा—रोज़ेदार तुम्हारे पास इफ़्तार करें और नेक बंदे तुम्हारा खाना खाएं और फ़रिश्ते तुम पर रहमत भेजें।

और इसके साथ वे दुआएं भी पढ़े जो पहले गुज़र चुकी हैं, जिनमें अल्लाह का शुक्र और हम्द है।

35. जब मेज़बान के घर से चलने लगे, तो दुआ़ दे

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ

(مسلم) ———————— وَارْحَمْهُمْ ط

अल्लाहुम–म बारिक लहुम फ़ीमा रज़क़्तहुम वग़्फ़िर लहुम वर्हम्हुम०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इनकी रोज़ी में बरकत दे और इनको बख़्श दे और इन पर रहम फ़रमा।

—मिश्कात

36. पीने का बयान

पानी या कोई और चीज़ बैठकर पिए और ऊंट की तरह एक सांस में न पिए, बल्कि दो या तीन सांसों में पिये और बर्तन में सांस न ले, न फूंक मारे और जब पीने लगे तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़े और जब पी चुके तो 'अल् हम्दु लिल्लाह' कहे।

—मिश्कात

37. ज़मज़म का पानी पीकर यह दुआ पढ़े

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَآءً مِّنْ کُلِّ دَآءٍ ط (حصن حصین)

अल्लाहुम–म इन्नी अस् अलु–क इल्मन नाफ़ि अंव व रिज़्कंव वासिअंव व शिफ़ाअम मिन कुल्लि दाइन०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे नफ़ा देने वाले इल्म और फैली रोज़ी का सवाल करता हूं। और हर रोग से सेहत पाने का सवाल करता हूं।

38. जब रोज़ा इफ़्तार करने लगे तो यह पढ़े

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ ط (ابوداؤد)

अल्लाहुम–म ल–क सुम्तु व अ़ला रिज़्क़ि–क अफ़्तर्तु —अबू दाऊद

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैंने तेरे ही लिए रोज़ा रखा और तेरे ही दिए रिज़्क़ पर रोज़ा खोला।

या यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ اَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ ؕ —— (حصن حصین)

अल्लाहुम–म इन्नी अस्अलु–क बि रह्मति–कल्लती व सिअ़त कुल–ल शैइन अन तग़्फ़िर ली ज़ुनूबी० —हिस्न

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी उस रहमत के वास्ते से सवाल करता हूं जो हर चीज़ को घेरे हुए है कि तू मेरे गुनाह माफ़ कर दे।

39. इफ़्तार के बाद यह दुआ पढ़े

ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللّٰهُ ـــــــ (ابوداؤد)

ज़–ह–बज़्ज़–म उ वब् तल्लतिल उरूकु व स–बतल अज–रू इन शाअल्लाहु०

तर्जुमा—प्यास चली गई और रगें तर हो गयीं और इन्शाअल्लाह सवाब साबित हो गया

—अबूदाऊद वग़ैरह

40. अगर किसी के यहां इफ़्तार करे तो पढ़े

اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰئِكَةُ ط

अफ़्त–र अिन–द कुमुस्साइमू न व अ–क–ल

तआ़–म कुमुल अब् रा–रू व सल्लत अ़लैकुमुल मलाइकतु०

तर्जुमा—तुम्हारे पास रोज़ेदार इफ़्तार करें और नेक बन्दे तुम्हारा खाना खाएं और फ़रिश्ते तुम पर रहमत भेजें। —हिस्न (इब्ने माजा वग़ैरह)

41. जब कपड़ा पहने तो यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّىْ وَلَا قُوَّةٍ

अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व–र–ज़कनीहि मिन ग़ैरि हौलिम मिन्नी व ला कुव्व तिन०

तर्जुमा—सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने यह कपड़ा मुझे पहनाया और नसीब किया बग़ैर

मेरी कोशिश और ताक़त के।

कपड़ा पहन कर इसको पढ़ लेने से अगले-पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं। —मिश्कात

42. नया कपड़ा पहने तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا كَسَوْتَنِيْهِ اَسْأَلُكَ خَيْرَهٗ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ ـــــ (مشكوٰة)

अल्लाहुम-म लकल हम्दु कमा कसौ-त नी हि अस् अलु-क ख़ै-र हू व ख़ै-र मा सुनि-अ़ लहू व अऊ़ज़ु बि-क मिन शर्रिही व शर्रि मा सुनि-अ़ लहू० —मिश्कात

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है, जैसा कि तूने यह कपड़ा मुझे पहनाया। मैं

तुझसे उसकी भलाई का और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूं, जिसके लिए यह बनाया गया है और मैं तेरी पनाह चाहता हूं उसकी बुराई से और उस चीज़ की बुराई से, जिसके लिए यह बनाया गया है।

नया कपड़ा पहनने की दूसरी दुआ़

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स नया कपड़ा पहन कर यह दुआ़ पढ़े—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ
بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیٰوتِیْ

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवा री बिही औरती व अ–त–जम्मलु बिही फ़ी–हयाती०

तर्जुमा—सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जिसने मुझे कपड़ा पहनाया, जिससे मैं अपनी शर्म की चीज़ छुपाता हूं और अपनी ज़िंदगी में इसके ज़रिए ख़ूबसूरती हासिल करता हूं।

और फिर पुराने कपड़े को सद्क़ा कर दे तो ज़िंदगी में और मरने के बाद ख़ुदा की हिफ़ाज़त और ख़ुदा के छुपाने में रहेगा, (यानी ख़ुदा उसे मुसीबतों से बचाए रखेगा और उसके गुनाहों को छिपाए रखेगा।) —मिश्कात

फ़ायदा—जब कपड़ा उतारे तो 'बिस्मिल्लाह' कह कर उतारे, क्योंकि 'बिस्मिल्लाह' की वजह से शैतान उसकी शर्मगाह की तरफ़ न देख सकेगा। —हिस्न हसीन

43. किसी को नया कपड़ा पहने देखे तो यह दुआ दे

تُبْلِىْ وَيُخْلِفُ اللّٰهُ ـــــ (حصن حصين ، ابوداؤد)

तुब्ली व युख़्लिफ़ुल्लाहु

तर्जुमा—'अल्लाह तुम्हारी उम्र में तरक़्क़ी (देवे, ताकि) तुम इस कपड़े को पुराना करो और इसके बाद खुदा तुमको और कपड़ा देवे।'

—हिस्न (अबूदाऊद)

44. जब आईने में अपनी शक्ल देखे

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِىْ فَحَسِّنْ خُلُقِىْ (حصن)

अल्लाहुम-म अन-त हस्सन-त ख़ल्क़ी फ़ हस्सिन ख़ुलुक़ी०

—हिस्न

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! जैसे तूने मेरी शक्ल अच्छी बनायी, मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दे।

45. औरत को निकाह करके लाये या नया जानवर ख़रीदे तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ

अल्लाहुम-म इन्नी अस् अलु-क ख़ै-र हा व ख़ै-र मा जबल-त हा अ़लैहि व अऊज़ु बि-क मिन शर्रिहा व शर्रि मा जबल-तहा अ़लैहि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे उसकी भलाई और उसकी आ़दत व अख़्लाक़ की भलाई का सवाल करता हूं और उसकी बुराई, उसके अख़्लाक़

व आदत की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं।

फ़ायदा—इसको पढ़कर बीवी की पेशानी के बाल पकड़ कर बरकत की दुआ करे और अगर ऊंट ख़रीदा हो, तो ऊपर से उसका कोहान पकड़ कर यह दुआ पढ़े[1]।

—मिश्कात अबूदाऊद, इब्ने माजा

46. दूल्हा को यों मुबारकबाद दी जाए

بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكُمَا وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِىْ خَيْرٍ ط ——— (احمد و ترمذی)

बा–र–कल्लाहु ल–क व बा–र–क अ़लैकुमा व ज–म–अ़ बै–न–कुमा फ़ी ख़ै रिन०

तर्जुमा—अल्लाह तुझे बरकत दे और तुम दोनों

---

1. हर नयी सवारी स्कूटर, कार वग़ैरह के अगले हिस्से पर हाथ रखकर यह दुआ पढ़ी जा सकती है।

पर बरकत नाज़िल करे और तुम दोनों का ख़ूब निबाह करे। —अहमद व तिर्मिज़ी

47. बीवी से हम–बिस्तरी के इरादे के वक़्त

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا ؕ

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम–म जन्निब न श्शैता–न व जन्निबिश्शैता–न मा–रज़क्त–ना०

तर्जुमा—मैं अल्लाह का नाम लेकर यह काम करता हूं। ऐ अल्लाह ! हमें शैतान से बचा और जो औलाद तू हमको दे, उससे (भी) शैतान को दूर रख।

इस दुआ को पढ़ लेने के बाद उस वक़्त की हम–बिस्तरी से जो औलाद पैदा होगी, शैतान

उसे भी नुक़्सान न पहुंचा सकेगा।

—बुख़ारी व मुस्लिम

फ़ायदा—इसको ज़रूर पढ़ना चाहिए, क्योंकि हम-बिस्तरी के वक़्त, अल्लाह का नाम न लेने से शैतान का नुत्फ़ा भी मर्द के नुत्फ़े के साथ अन्दर चला जाता है।

48. मनी निकलने पर दिल में यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ لِلشَّيْطٰنِ فِيْمَا رَزَقْتَنِيْ نَصِيْبًا ؕ

अल्लाहुम-म ला तज-अल लिश्शैतानि फ़ीमा रज़क़्त-नी नसीबा०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! जो औलाद तू मुझे दे, उसमें शैतान का कुछ हिस्सा न कर।

फ़ायदा—सातवें दिन बच्चे का नाम रखे

और अक़ीक़ा करे।

फ़ायदा—जब बच्चा पैदा हो तो अल्लाह तआ़ला के किसी नेक बन्दे के पास ले जाए और उससे बरकत की दुआ़ कराए और खजूर या छुहारे या कोई और चीज़ उससे चबवा कर बच्चे के मुंह में डलवाए।

फ़ायदा—जब बच्चा बोलने लगे तो पहले उसे 'ला इला–ह इल्लल्लाह' सिखाये और यह आयत भी याद कराये–

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ یَکُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِیْرًا ○ —— (حصن حصین)

व कुलिल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़ व–ल दंव–व लम यकुल्लहु शरीकुन

फ़िल मुल्कि व लम् यकुल्लहू वलिय्युम मिन ज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तक्बीरा॰[1] —हिस्न

49. जब चांद पर नज़र पड़े तो यह दुआ पढ़े

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ هٰذَا ۔

अऊज़ु बिल्लाहि मिनशर्रि हाज़ा॰ —तिर्मिज़ी

तर्जुमा—मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं इसके शर से।

50. नया चांद देखे तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى رَبِّيْ وَ

---

1. यह सूरः बनी इस्राईल की आख़िरी आयत है, जिसका तर्जुमा यह है— 'और आप कहा दीजिए कि सब तारीफ़ उसके लिए है जिसने न किसी को अपनी औलाद बनाया और न मुल्क में उसका कोई शरीक है और न इज़्ज़त से कोई उसका मददगार है, और तू अल्लाह की बड़ाई बयान कर अच्छी तरह से।

رَبُّكَ اللّٰهُ ـــــــــــ (حصن ابن حبان)

अल्ला हुम-म अहिल-ल हू अलैना बिल युम्नि वल ईमानि वस्सलामति वल इस्लामि वत्तौफ़ीकि़ लिमा तुहिब्बु व तर्ज़ा रब्बी व रब्बुकल्लाह०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इस चांद को हमारे ऊपर बरकत और ईमान और सलामती और इस्लाम के साथ और इन आमाल की तौफ़ीक़ के साथ निकला हुआ रख, जो तुझे पसन्द हैं। ऐ चांद ! मेरा और तेरा रब अल्लाह है। (हिस्न इब्ने हिब्बान)

51. जब किसी को रुख़्सत करे तो यह पढ़े

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ ـــــــــــ (ترمذی)

अस्तौदिअुल्ला-ह दी-न-क व अ मा-न-त-क व ख़्वाती-म-अ़-म-लि-क०

तर्जुमा—अल्लाह के सुपुर्द करता हूं तेरा दीन और तेरी अमानतदारी की ख़ूबी और तेरे अ़मल का अंजाम० —तिर्मिज़ी

52. मुसाफ़िर को यह दुआ़ भी दे

زَوَّدَكَ اللّٰهُ التَّقْوٰى وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُ كُنْتَ ـــــــــ (ترمذی)

ज़-व-व-द-कल्लाहु त्तक़्वा व ग़-फ़-र-ज़म-ब-क व यस्स-र-ल-कल ख़ै-र हैसु कुन-त० —तिर्मिज़ी

तर्जुमा—ख़ुदा परहेज़गारी को तेरे सफ़र का सामान बनाये और तेरे गुनाह बख़्शे और जहां तू

जाये, वहां तेरे लिए भलाई आसान करे।

53. उसके जाने पर यह दुआ़ दे

اَللّٰهُمَّ اطْوِلَهُ الْبُعْدَ وَهَوِّنْ عَلَيْهِ السَّفَرَ۔ (ترمذی)

अल्लाहुम–म अतविलहुल बुअ्–द व हव्विन अलैहिस्स–फ़–र०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! उसके सफ़र का रास्ता जल्दी तै करा दे और उस पर सफ़र आसान कर दे।

—तिर्मिज़ी

54. रुख़सत होने वाला रुख़सत करने वाले को यह दुआ़ दे

أَسْتَوْدِعُكُمُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا تَضِيْعُ وَدَائِعُهُ

अस्तौदिअ़ुकुमुल्लाह ल्लजी ला तजीअु वदाइ–अु हू०

तर्जुमा—तुमको अल्लाह के सुपूर्द करता हूं, जिसकी हिफ़ाज़त में दी हुई चीज़ें बर्बाद नहीं होती हैं।

—हिस्न हसीन

55. जब सफ़र का इरादा करे तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِيْرُ (حصن حصين)

अल्लाहुम–म बि–क असूलु व बि–क अहूलु व बि–क असीरू० हिस्न हसीन

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी ही मदद से

(दुश्मनों पर) हमला करता हूं और तेरी ही मदद से उनको दूर करने की तद्बीर करता हूं और तेरी ही मदद से चलता हूं।

जब सवार होने लगे और रकाब या पायदान पर क़दम रखे, तो 'बिस्मिल्लाह' कहे और जब जानवर की पीठ या सीट पर बैठ जाए तो 'अल् हम्दु लिल्लाह' कहे, फिर यह आयत पढ़े।

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ۝ وَاِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝ (سورۂ زخرف پارہ ـــ ۲۵)

सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़–र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन० व इन्ना इला रब्बिना ल–मुन्क़लिबून० –सूरः ज़ुख़रुफ़, पार 25

तर्जुमा—अल्लाह पाक है, जिसने इसको हमारे क़ब्ज़े में दे दिया और हम उसकी क़ुदरत के

बग़ैर इसे क़ब्ज़े में करने वाले न थे और बिला शुब्हा हमको अपने रब की तरफ़ जाना है।

इसके बाद तीन बार 'अल हम्दु लिल्लाह' और तीन बार 'अल्लाहु अक्बर' कहे, फिर यह दुआ पढ़े–

سُبْحَانَكَ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ،

सुब्हा–न–क इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर ली फ़ इन–न हू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू–ब इल्ला अन–त०

तर्जुमा—ऐ ख़ुदा ! तू पाक है। बेशक मैंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया तू मुझे बख़्श दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही गुनाह बख़्शता है। इसको पढ़ कर मुस्कराना भी मुस्तहब है।

56. जब सफ़र को रवाना होने लगे, तो यह पढ़े,

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِلَنَا بُعْدَهٗ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْٓءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ وَدَعْوَةِ الْمَظْلُوْمِ

अल्लाहुम-म इन्ना नस् अलु-क फ़ी स-फ़-रिना हाज़ल बिर-र वत्तक़्वा व मिनल अ़-म लि मा तर्ज़ा अल्लाहुम-म हव्विन अ़लैना स-फ़-र-ना हाज़ा वत्वि-ल-ना बुअ़द हू अल्ला-हुम-म अन्तस्साहिबु फ़िस्स-फ़-रि वल

ख़लीफ़तु फ़िल अह्लि अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबिक मिंव-वअ् साइस्स-फ़ रि व कआ ब ति ल मन्ज़रि व सूइल मुन्क़ल-बि फ़िल मालि वल अह्लि व अऊज़ुबि-क मिनल हौरि बअ् दल कौरि व दअ़ वतिल मज़्लूमि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हम तुझसे इस सफ़र में नेकी और परहेज़गारी का सवाल करते हैं और उन आमाल का सवाल करते हैं, जिनसे आप राज़ी हों। ऐ अल्लाह ! हमारे इस सफ़र को हम पर आसान फ़रमा दे और इसका रास्ता जल्दी-जल्दी तै करा दे। ऐ अल्लाह ! तू सफ़र में हमारा साथी है और हमारे पीछे घर बार का कारसाज़ है। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं सफ़र की मशक़्क़त और घार-बार में बुरी वापसी से और बुरी हालत के देखने से और

बनने के बाद बिगड़ने से और मज़्लूम की बद–दुआ़ से।

फ़ायदा—सफ़र को रवाना होने से पहले अपने घर में दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ना भी मुस्तहब है। –किताबुल अज़्कार (नववी)

फ़ायदा—जब बुलंदी पर चढ़े तो 'अल्लाहु अक्बर' पढ़े और जब बुलंदी से नीचे उतरे तो 'सुब्हानल्लाह' कहे और जब किसी पानी बहने के नशेब में गुज़रे तो 'ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर' पढ़े। अगर सवारी का पैर फिसल जाए या एक्सीडेंट हो जाए तो 'बिस्मिल्लाह' कहे।

–हिस्न

57. समुंद्री जहाज़ या नाव में सवार हो तो पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّىْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ○

बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्सा हा इन–न रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रहीम॰

व मा क़–द रुल्ला–ह हक़्क़ क़द्रि–ही वल् अर्जु जमीअ़न क़ब्ज़तुहू यौमल क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम बियमानिही सुब्हान हू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून॰

तर्जुमा—अल्लाह के नाम से इसका चलना और ठहरना है, बेशक मेरा परवरदिगार ज़रूर बख़्शने वाला और मेहरबान है और काफ़िरों ने ख़ुदा को न पहचाना, जैसा कि उसे पहचानना चाहिए। हालांकि क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी

मुट्ठी में होगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे, वह पाक है और उस अक़ीदे से बरतर है जो मुश्रिक शिर्क का अक़ीदा रखते हैं।

—हिस्ने हसीन

58. किसी मंज़िल (रेलवे स्टेशन या मोटरस्टेंड) पर उतरे तो पढ़े

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (مسلم)

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़—लक़०

तर्जुमा—अल्लाह के पूरे कलिमात के वास्ते से अल्लाह की पनाह चाहता हूं उसकी मख़्लूक़ के शर से।

इसके पढ़ लेने से कोई चीज़ कूच करने

तक नुक़सान न पहुंचाएगी। —मुस्लिम

59. जब वह बस्ती नज़र आए, जिसमें जाना है तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَآ اَظْلَلْنَ وَرَبَّ
الْاَرَضِيْنَ السَّبْعِ وَمَآ اَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ
وَمَآ اَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ فَاِنَّا نَسْئَلُكَ
خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ اَهْلِهَا وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ
شَرِّهَا وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا (حصن حصين عن ابن حبان)

अल्लाहुम–म रब्बस्समावातिस्सब अि व मा अज़्लल–न व र ब्बल अर्जीनस्सब्अि व मा अक़्लल–न व रब्बश्श्याातीनि व मा अज़्ललन व रब्बर्रियाहि व मा ज़रै–न फ़ इन्ना नस् अलु–क खै़–र हाज़िहिल क़र्य ति व खै़–र अह्लिहा व न अूज़ु बि–क मिन शर्रिहा व शार्रि अह्लिहा व शर्रि

मा फ़ीहा० —हिस्न (इब्ने हिब्बना)

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! जो सातों आसमानों और उन सब चीज़ों का रब है जो आसमानों के नीचे हैं और जो सातों ज़मीनों का और उन सब चीज़ों का रब है, जो उनके ऊपर हैं और जो शैतानों का और उन सब का रब है, जिनको शैतानों ने गुमराह किया है और जो हवाओं का और उन चीज़ों का रब है, जिन्हें हवाओं ने उड़ाया है, सो हम तुझसे उस आबादी की और उसके बाशिंदों की ख़ैर का सवाल करते हैं और उसके शर से और उसकी आबादी के शर से और उन चीज़ों के शर से तेरी पनाह चाहते हैं, जो उसके अन्दर हैं।

60. किसी शहर या बस्ती में दाख़िल होने लगे, तो तीन बार पढ़े

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِیْھَا ؕ ——— (حصن حصین)

अल्लाहुम–म बारिक लना फ़ीहा०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू हमें इसमें बरकत दे।
—हिस्न

फिर ये पढ़े

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاھَا وَحَبِّبْنَا اِلٰی اَھْلِھَا وَحَبِّبْ صَالِحِیْ اَھْلِھَا اِلَیْنَا ؕ ——— (حصن حصین طبرانی)

अल्लाहुम–मर्ज़ुक़्ना जना हा व हब्बिब्ना इला अह्लि हा व हब्बिब सालिही अह्लिहा इलैना

हिस्न (तबरानी)

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू हमें इसके मेवे नसीब फ़रमा और यहां के बाशिंदों के दिलों में हमारी मुहब्बत और यहां के नेक लोगों की मुहब्बत हमारे दिलों में पैदा फ़रमा।

61. जब सफ़र में रात हो जाए तो यह पढ़े

يَآ اَرْضُ رَبِّيْ وَرَبُّكِ اللّٰهُ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّكِ وَشَرِّ مَا خُلِقَ فِيْكِ وَشَرِّ مَا يَدِبُّ عَلَيْكِ وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ اَسَدٍ وَّاَسْوَدَ مِنَ الْحَيَّةِ وَالْعَقْرَبِ وَمِنْ شَرِّ سَاكِنِي الْبَلَدِ وَمِنْ وَّالِدٍ وَّمَا وَلَدَ

या अर्जु रब्बी व रब्बुकिल्लाहु अऊजु बिल्लाहि मिन शर्रिकि, व शर्रि मा खुलि–क़ फ़ी कि व शर्रि मा यदिब्बु अलैकि व अऊज़ु बिल्लाहि मिन

अ–सदिंव अस–व–द मिनल हय्यति वल अक़रबि व मिन शर्रि साकिनिल ब–ल–दि व मिंव–वालिदिंव–व मा व–ल–द०

तर्जुमा—ऐ ज़मीन ! मेरा और तेरा रब अल्लाह है। मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं। तेरे शर से और उन चीज़ों के शर से, जो तुझमें पैदा की गयी हैं और तुझ पर चलती हैं और अल्लाह की पनाह चाहता हूं शेर से अज़दहे से और सांप और बिच्छू से और इस शहर के रहने वालों से और बाप से और औलाद से –हिस्न (अबूदाऊद)

62. सफ़र में जब सुबह का वक़्त हो तो यह पढ़े

سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللّٰهِ وَنِعْمَتِهٖ وَحُسْنِ بَلَآئِهٖ عَلَيْنَا رَبَّنَا صَاحِبْنَا وَاَفْضِلْ عَلَيْنَا

عَائِذٌ اَبَاللّٰهِ مِنَ النَّارِ ——— (حصن حصين)

समि-अ सामिअुम बिहम्दिल्लाहि व निअ्मतिहि व हुस्नि बलाइ ही अलैना रब्बना साहिब-ना व अफ़्ज़िल अलैना आइज़म बिल्लाहि मिनन्नारि० —हिस्ने हसीन

तर्जुमा—सुनने वाले ने (हम से) अल्लाह की तारीफ़ बयान करना सुना और उसकी नेमत का और हमको अच्छे हाल में रखने का इक़रार जो हमने किया, वह भी सुना। ऐ हमारे रब ! तू हमारे साथ रह और हम पर फ़ज़्ल फ़रमा। यह दुआ करते हुए दोज़ख़ से अल्लाह की पनाह चाहता हूं।

कुछ रिवायतों में है कि इसको ऊंची आवाज़ से पढ़े और तीन बार पढ़े।

फ़ायदा—हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो सवार अपने सफ़र में दुनिया की बातों से दिल हटा कर अल्लाह की तरफ़ ध्यान रखे और उसकी याद में लगा रहे, तो उसके साथ फ़रिश्ता रहता है और जो शख़्स बेकार के शेरों में किसी और बेहूदा कामों में लगा रहता है, तो उसके साथ शैतान रहता है। —हिस्न

अगर सफ़र में दुश्मन वग़ैरह का ख़ौफ़ हो तो सूरः लि ईलाफ़ि क़ुरैश पढ़े। कुछ बुज़ुर्गों ने इसका तजुर्बा भी किया है। —हिस्न

फ़ायदा—हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जुबैर बिन मुत्इम रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया कि सफ़र में इन पांच सूरतों को पढ़ें—

1. क़ुल या अय्युहल काफ़िरून,
2. इज़ा जा–अ नस–रूल्लाह,
3. क़ुल हुवल्लाहु अहद,
4. क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लकि,
5. क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास

हर सूरः 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' से शुरू की जाए और कुल अऊज़ू बिरब्बिन्नासि के ख़त्म पर भी बिस्मिल्ला पढ़ी जाए। इस तरह 'बिस्मिल्लाह' छः बार हो जाएगी।

हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब कभी मैं सफ़र में निकलता था, तो मालदार होने के बावजूद भी रास्ते का सामान साथियों से कम रह जाता था और मेरा हाल बुरा हो जाता था, लेकिन जब मैंने ये सूरतें पढ़नी शुरू कीं, उस वक़्त से मैं वापस होने तक सफ़र

के अपने तमाम साथियों से अच्छी हालत में रहता हूं और रास्ते का सामान भी उन सब से ज़्यादा मेरे पास रहता है।

63. सफ़र से वापस होने के आदाब

जब सफ़र से वापस होने लगे, तो सवारी पर बैठ कर सवारी की दुआ पढ़ने के बाद वह दुआ पढ़े, जो सफ़र को रवाना होते वक़्त पढ़ी थी, यानी—

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِىْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى

अल्लाहुम-म इन्ना नस् अलु-क फ़ी स-फ़-रिना हाज़ल बिर-र वत्तक़्वा आख़िर तक और जब रवाना हो जाए तो सफ़र की दूसरी दुआओं और मस्नून आदाब का ख़्याल रखते हुए

हर बुलंदी पर 'अल्लाहु अक्बर' तीन बार कहे और फिर यह पढ़े—

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ سَاجِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ ـــــ (بخاری ومسلم)

ला—इला—ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी—क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु—व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर आइबू—न ताइबू—न आ़बिदू—न साजिदू—न लिरब्बिना हामिदुन स द—क़ल्लाहु वअ़—द हू व न—स—र अ़ब्दहू व ह—ज़ मल अहज़ाब वह्द हू०

तर्जुमा—कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा, वह

तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए हम्द है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, सज्दा करने वाले हैं, अपने रब की हम्द करने वाले हैं, अल्लाह ने अपना वायदा सच्चा कर दिया, अपने बन्दे की मदद की और मुख़ालिफ़ फ़ौज का हराया। —मिश्कात

64. सफ़र से वापस होकर जब अपने शहर या बस्ती में दाख़िल हो तो पढ़े

آيِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ (حصن حصين)

आइबू–न ताइबू–न आबिदू–न लिरब्बिना हामिदून० —हिस्न

तर्जुमा—हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले

हैं, अल्लाह की बन्दगी करने वाले हैं, अपने रब की हम्द करने वाले हैं।

हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आ़दते शरीफ़ा थी कि सफ़र से वापसी पर अपने शहर से चाश्त के वक़्त दाख़िल होते थे और सबसे पहले मस्जिद पहुंचकर दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाते थे। इसके बाद (कुछ देर) मस्जिद में तश्रीफ़ रखते थे (फिर घर में जाते थे।) —बुख़ारी व मुस्लिम

हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जुमेअ़रात के दिन सफ़र के लिए रवाना होने को पसन्द फ़रमाते थे।

65. सफ़र से वापस होकर घर में दाख़िल हो तो यह पढ़े

اَوْبًا اَوْبًا لِرَبِّنَا تَوْبًا لَّا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا

(حِصن عن ابی یعلی)

औ बन औबन लिरब्बिना तौबन ला युग़ादिरू अलेना हौबन० —हिस्न (अबूयाला)

तर्जुमा—मैं वापस आया हूं, मैं वापस आया हूं अपने रब के सामने ऐसी तौबा करता हूं जो हम पर कोई गुनाह न छोड़े।

66. जब किसी को मुसीबत, परेशानी या बुरे हाल में देखे तो यह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا ○

अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्तला–क बिही व फ़ज़्ज़–ल–नी अ़ला क–सीरिम मिम्मन ख़–ल–क़ तफ़्ज़ीला० —हिस्न

तर्जुमा—सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिसने मुझे इस हाल में बचाया, जिसमें तुझे मुब्तला किया और उसने अपनी बहुत–सी मख़्लूक़ पर मुझे फ़ज़ीलत दी।

उसकी फ़ज़ीलत यह है कि उसके पढ़ लेने से वह मुसीबत या परेशानी पढ़ने वाले को न पहुंचेगी, जिसमें वह मुब्तला था, जिसे देखकर यह दुआ़ पढ़ी गयी है। —मिश्कात

फ़ायदा—अगर वह शख़्स मुसीबत में मुब्तला हो तो इस दुआ़ को धीरे से पढ़े ताकि उसे रंज न हो और अगर वह गुनाह में मुब्तला हो तो ज़ोर से पढ़े ताकि उसे सबक़ मिले।

67. किसी को हंसता देखे तो यों दुआ दे

أَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ ——— (بخاری و مسلم)

अज़्हकल्लाहु सिन्न-क०

तर्जुमा—ख़ुदा तुझे हंसाता रहे।

—बुख़ारी व मुस्लिम
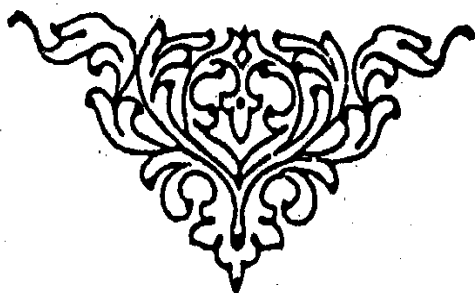
68. जब दुश्मनों को डर हो तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ ــــ (ابوداؤد شریف)

अल्लाहमु–म इन्ना नज्अलु–क फ़ी नुहूरिहिम व न अ़ूज़ु बि–क मिन शुरूरिहिम०

—अबू दाऊद शरीफ़

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हम तुझे इन (दुश्मनों) के सीनों में (तसर्रुफ़ करने वाला) बनाते हैं और उनकी शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं।

69. अगर दुश्मन घेर ले तो यह दुआ़ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَّوْعَاتِنَا ــــ (حصن حصین)

अल्लाहुम– मस्तुर औ रातिना व आमिरौं–आतिना० –हिस्न

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हमारी आबरू की हिफ़ाज़त फ़रमा और ख़ौफ़ हटाकर हमें अम्न में रख।

70. मज्लिस से उठने से पहले यह पढ़े

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

सुब्हा न–कल्लाहुम–म व बिहम्दि–क अश्हदु अल्ला इला–ह इल्ला अन–त अस्तग़्फ़िरूक व अतूबु इलैक०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू पाक है और मैं तेरी हम्द बयान करता हूं। मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, मैं तुझसे माफ़ी चाहता

हूं और तेरे सामने तौबा करता हूं।

अगर मज्लिस में अच्छी बातें की होंगी, तो ये कलिमात उन पर मुहर बन जाएंगे और अगर फ़ुज़ूल और बेकार की बातें की होंगी तो ये कलिमात उनका कफ़्फ़ारा हो जाएंगे।

—तिर्मिज़ी व तर्ग़ीब

कुछ रिवायतों में है कि इन कलिमात को तीन बार कहे।

71. जब कोई परेशानी हो तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ فَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَّاَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ ـــــــــ (حصن حصین)

अल्लाहुम-म रहम-त क अर्जू फ़ला

तकिल्नी इला नफ़्सी तर्फ़-त ऐ निंव व अस्लिह्ली शानी कुल्लहू ला इला-ह इल्ला अन-त०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी रहमत की उम्मीद करता हूं, तू मुझे पल भर भी मेरे सुपुर्द न कर और मेरा सारा हाल दुरुस्त फ़रमा दे, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। —हिस्न

या यह पढ़े

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ○

हस्बुनल्लाहु व निअ्मल वकीलु०

तर्जुमा—अल्लाह हमें काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है।

या यह पढ़े

اَللّٰهُ رَبِّیْ لَاۤ اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا ـــــ (حصن حصین)

अल्लाहु रब्बी ला उश्रिकु बिही —शैआ०

तर्जुमा—अल्लाह मेरा रब है, मैं उसके साथ किसी भी चीज़ को शरीक नहीं बनाता।

—हिस्न (अबूदाऊद)

या यह पढ़े

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ (مستدرک حاکم

या हय्यु या क़य्यूमु बिरह्मति—क अस्तग़ीसु०

तर्जुमा—ऐ ज़िंदा और क़ायम रखने वाले ! मैं तेरी रहमत के वास्ते से फ़रियाद करता हूं।

—मुस्तदरक हाकिम

या यह दुआ पढ़े

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ

مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ○

ला इला—ह इल्ला अन—त सुब्हान—क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है बेशक मैं (गुनाह करके) अपनी जान पर ज़ुल्म करने वालों में से हूं।

क़ुरआन शरीफ़ में है कि इन लफ़्ज़ों के ज़रिए हज़रत यूनुस अ़लै० ने मछली के पेट में अल्लाह को पुकारा था और हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कभी कोई मुसलमान इन लफ़्ज़ों के ज़रिए अल्लाह तआ़ला से दुआ करे, तो अल्लाह उसकी दुआ़ ज़रूर क़ुबूल फ़रमाएंगें। —तिर्मिज़ी वग़ैरह

कुछ हदीसों में इसको इस्मे आज़म बताया गया है।

एक हदीस में इर्शाद है कि ला हौ ल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि 11 मर्ज़ों की दुआ है, जिनमें सबसे कम दर्जे का रंज है।

—बैहक़ी

मतलब यह है कि यह कलिमा बड़े-बड़े दुख-दर्द के लिए नफ़ा देने वाला और फ़ायदेमंद है और रंज व ग़म की तो इसके सामने कोई हक़ीक़त ही नहीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स इस्तिग़फ़ार में लगा रहे, अल्लाह उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता और हर ग़म से छुटकारे का ज़रिया बना देंगे और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देंगे, जहां से ध्यान भी न होगा।

–मिश्कात (अहमद)

72. हर क़िस्म की माली तरक़्क़ी के लिए यह दरूद शरीफ़ है

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

अल्लाहुम-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन अ़ब्दि–क व रसूलि–क व अ़ल–ल मुअ्मिनी–न वल मुअ्मिनाति व अ़लल मुस्लिमी–न वल मुस्लिमाति०

तर्जुमा——ऐ अल्लाह ! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर, जो तेरे बन्दे और रसूल हैं और मोमिन मर्दों, औरतों और मुस्लिम मर्दों और औरतों पर रहमत नाज़िल

फ़रमा। —हिस्न (अबू यअ़ला)

73. शबे क़द्र की दुआ

यह है

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّىْ

(حصن حصین)

अल्लाहुम्म–म इन्न–क अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़ व फ़अ्फु अ़न्नी

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! बेशक तू माफ़ करने वाला है, माफ़ करने को पसन्द करता है, इसलिए तू मुझे माफ़ कर दे। —तिर्मिज़ी वग़ैरह

जब किसी से अल्लाह के लिए मुहब्बत हो, तो उसको ज़ाहिर कर दे कि मुझे आपसे मुहब्बत है। इसके जवाब में दूसरे को यों कहना चाहिए, 'अहब्ब–कल्लज़ी अहबबतनी' यानी वह ख़ुदा तुझसे

मुहब्बत करे, जिसके लिए तूने मुहब्बत की।

—अबूदाऊद

74. अपने साथ एहसान करने वाले को यह दुआ दे

جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا ـــــــــــ (مشکوٰۃ شریف)

जज़ाकल्लाहु ख़ैरन०

तर्जुमा—तुझे अल्लाह (इसका) अच्छा बदला दे।

—मिश्कात शरीफ़

75. जब क़र्ज़दार क़र्ज़ा अदा कर दे तो उसको यह दुआ़ दे

اَوْفَيْتَنِيْ اَوْفَى اللّٰهُ بِكَ ___ (حصن حصین)

औफ़ै तनी औफ़ल्लाहु बि–क०

तर्जुमा—तूने मेरा क़र्ज़ अदा कर दिया, अल्लाह तुझे (दुनिया व आख़िरत में) बहुत दे। –हिस्न

76. जब अपनी कोई महबूब चीज़ देखे, तो यह दुआ़ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

अल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बि नि अ़ मति ही ततिम्मुस्सालिहातु०

तर्जुमा—सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिसकी नेमत से अच्छी चीज़ें मुकम्मल होती हैं। इब्ने माजा

77. जब कभी दिल बुरा करने वाली चीज़ें पेश आयें तो यह पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ ۔ (حصن حصين، ابن ماجه)

अल् हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिन॰

तर्जुमा—हर हाल में अल्लाह तारीफ़ का हक़दार है।

—हिस्न (इब्ने माजा)

78. कोई चीज़ गुम हो जाये, गुलाम या जानवर भाग जाए, तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ رَادَّ الضَّالَّةِ وَهَادِيَ الضَّالَّةِ اَنْتَ تَهْدِيْ مِنَ الضَّلَالَةِ اُرْدُدْ عَلَيَّ ضَالَّتِيْ بِقُدْرَتِكَ وَ

سُلْطَانِكَ فَإِنَّهَا مِنْ عَطَائِكَ وَفَضْلِكَ ـــــ

(حِصن حصین)

अल्लाहुम-म राद्दज़्ज़ाल्लति व हादियज़्ज़ाल्लति अन-त तह्दी मिनज़्ज़लालति उर्दुद अलय-य ज़ाल्लती बिक़ुदरति-क व सुल्-तानि-क फ़ इन्नहा मिन अताइ-क व फ़ज़्लि-क०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! ऐ गुमशुदा को वापस करने वाले ! और राह भटके हुए को राह दिखाने वाले ! तू ही गुमशुदा को राह बताता है, अपनी क़ुदरत और ग़ालबिय्यत के ज़रिए मेरी गुमशुदा चीज़ को वापस कर दे, क्योंकि वह बेशक तेरी अ़ता और तेरे फ़ज़्ल से मुझे मिली थी।

—हिस्ने हसीन

79. जिस की जुबान बहुत चलती हो

उसे चाहिए कि 'अस्तग्फ़िरुल्लाह' यानी मैं अल्लाह से मग़्फ़िरत का सवाल करता हूं पढ़ा करे। इससे जुबान की तेज़ी में कमी हो जाएगी।

—नसई

80. जब नया फल आये तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِىْ ثَمَرِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِىْ مَدِيْنَتِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِىْ صَاعِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِىْ مُدِّنَا

अल्लाहुम–म बारिक लना फ़ी स–म–रिना व बारिक लना फ़ी मदीनतिना व बारिक लना फ़ी साअ़िना व बारिक लना फ़ी मुद्दिना०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हमारे फलों में बरकत दे और हमें हमारे शहर में बरकत दे और हमारे ग़ल्ला नापने के पैमानों में बरकत दे।

इसके बाद उस फल को अपने सबसे छोटे बच्चे को दे —मुस्लिम

या उस वक़्त उस मज्लिस में जो सबसे छोटा बच्चा हो उसको दे दे। —हिस्न

81. जब गुस्सा आये या गधे या कुत्ते की आवाज़ सुने या बुरे वसवसे आयें तो पढ़े

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ (مشكوٰة)

अऊज़ु बिल्लाहि मिन श्शैतानिर्र जीम०

तर्जुमा—मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूं शैताने मर्दूद से। —मिश्कात

और जब मुर्ग़ की आवाज़ सुने तो अल्लाह से फ़ज़्ल का सवाल करे। –बुख़ारी व मुस्लिम

82. बारिश के लिए तीन बार यह दुआ मांगे

اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا ـــــ

अल्लाहुम–म अग़िस्ना॰

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हमारी दादरसी फ़रमा।

–मुस्लिम

या यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْ عَلٰى اَرْضِنَا زِيْنَتَهَا وَسَكَنَهَا ـــــ (حصن حصين)

अल्लाहुम–म अन्ज़िल अला अर्ज़ि ना ज़ी–न–त हा व स–क–न–हा॰

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हमारी ज़मीन पर ज़ीनत यानी फूल-बूटे और उसका चैन नाज़िल फ़रमा।

—अबू अवाना

फ़ायदा—अल्लाह की बारगाह में तौबा व इस्तिग़्फ़ार को बारिश होने में बड़ा दख़ल है।

83. जब बादल आता हुआ नज़र पड़े तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَآ اُرْسِلَ بِهٖ اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا۔ (حصن حصین)

अल्लाहुम्म-म इन्ना नऊज़ु बि-क मिन शर्रि मा उर्सि-ल बिही अल्लाहुम-म सय्यिबन नाफ़िअ़न०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हम उस चीज़ की बुराई से तेरी पनाह चाहते हैं जिसे लेकर ये लश्कर भेजा गया है। ऐ अल्लाह ! नफ़ा देने वाली

बारिश बरसा है। —हिस्न हसीन

अगर बादल बरसे बग़ैर खुल जाए तो उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे, (कि अल्लाह पाक ने उसको किसी मुसीबत का ज़रिया नहीं बनाया।)

—हिस्न

84. जब बारिश होने लगे तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَّافِعًا ——— (بخاری)

अल्लाहुम-म सय्यिबन नाफ़िअन०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इसको बहुत बरसने वाला और नफ़ा देने वाला बना। —बुख़ारी

85. जब बारिश हद से ज़्यादा होने लगे, तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ عَلَى الْاٰكَامِ وَالْاٰجَامِ وَالظِّرَابِ وَالْاَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ ـــــ (بخاری ومسلم)

अल्लाहुम-म हवालैना व ला अलैना अल्लाहुम-म अलल आकामि वल आजामि वज़्ज़िराबि वल औदियति व मनाबितश्शज-रि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हमारे आस-पास इसको बरसा और हम पर न बरसा। ऐ अल्लाह ! टीलों पर और बनों में और पहाड़ों और नालों में और पेड़ पैदा होने की जगहों में बरसा।

—बुख़ारी व मुस्लिम

86. जब कड़कने और गरजने की आवाज़ सुने तो यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا
بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ (حصن حصين)

अल्लाहुम-म ला तक़्तुलना बि ग़-ज़-बि-क व ला तुह्लिक्ना बि अज़ाबि-क व आफ़िना क़ब्-ल-ज़ालि-क०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हम को अपने ग़ज़ब से क़त्ल न फ़रमा और अपने अज़ाब से हमें हलाक न कर और इससे पहले हमें चैन दे। —तिर्मिज़ी

जब आंधी आये तो उसकी तरफ़ मुंह करे और दो ज़ानू यानी तशह्हुद की हालत की तरह बैठकर यह पढ़े—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا رَحْمَةً وَّلَا تَجْعَلْهَا عَذَابًا
اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا رِيَاحًا وَّلَا تَجْعَلْهَا رِيْحًا

अल्लाहुम-म-मज-अ़लहा रहमतंव व ला तज-अ़ल-हा अ़ज़ाबन अल्लाहुम-मज-अ़ल-हा रियाहंव व ला तज-अ़ल-हा रीहन०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इसे रहमत बना और इसे अ़ज़ाब न बना। ऐ अल्लाह ! इसे नफ़ा वाली हवा बना और नुक़्सान वाली हवा न बना।

—हिस्न हसीन

फ़ायदा—अगर आंधी के साथ अंधेरा भी हो (जिसे काली आंधी कहते हैं) तो सूरः 'क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल फ़-ल-क़' और 'क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नासि' पढ़े। —मिश्कात

87. हज का तल्बिया

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ (مشكوٰة)

लब्बैक अल्लाहुम–म लब्बैक– लब्बैक ला शरी–क ल–क लब्बैक इन्नल हम–द वन्नि्अ्–मत ल–क वल–मुल–क ला शरी–क लक०

तर्जुमा—मैं हाज़िर हूं ऐ अल्लाह ! मैं हाज़िर हूं तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूं। बेशक हम्द और नेमत तेरे ही लिए है और मुल्क भी तेरा ही है। तेरा कोई शरीक नहीं। —मिश्कात

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो भी मुसलमान तल्बिया पढ़ता है, तो जहां तक पूरब व पच्छिम है, उसके दाएं–बाएं हर पत्थर और हर पैड़ और मिट्टी का ढेला, ये सभी तल्बिया पढ़ते हैं —तिर्मिज़ी

फ़ायदा—तल्बिया से फ़ारिग होकर अल्लाह तआला से उसकी खुशी और जन्नत का सवाल करे और दोज़ख़ से निजात पाने की दुआ

मांगे —मिश्कात

88. अरफ़ात में पढ़ने के लिए

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ
فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا ط
اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۝ وَيَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ وَ
اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّسَاوِسِ الصَّدْرِ وَشَتَاتِ الْاَمْرِ
وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي
اللَّيْلِ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ وَشَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيَاحُ ط

ला इला–ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी–क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु–व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर अल्ला–हुम–मज–अ़ल फ़ी

क़ल्बी नूरंव-व फ़ी सम-अ़ी नूरंव-व फ़ी ब-स-री नूरन अंल्लाहुम्मश्रह ली सद्री व यस्सिर ली अमरी व अऊ़ज़ु बि-क मिंव-वसाविसिस्सद्रि व शतातिल अम्रि व फ़ित्नतिल क़ब्रि अल्लाहुम-म इन्नी अऊ़ज़ु बि-क मिन शर्रि मा यलिजु फ़िल्लैलि व शर्रि मा यलिजु फ़िन्नहारि व शर्रि मा तहुब्बु बिहिर्रियाहु०

फ़ायदा—कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए हम्द है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह ! मेरे दिल में नूर कर दे और मेरे कानों में नूर कर दे और मेरी आंखों में नूर कर दे। ऐ अल्लाह ! मेरा सीना खोल दे और मेरे कामों को आसान फ़रमा दे और मैं सीने के वस्वसों और कामों की

बद-नज़्मी और क़ब्र के फ़ित्ने से तेरी पनाह चाहता हूं। ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं उस चीज़ की बुराई से जो रात में दाख़िल होती है और उसकी बुराई से जो दिन में दाख़िल होती है और उसकी बुराई से जिसे हवाएं लेकर चलती हैं।

89. बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करते हुए पढ़े

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط

सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि०

तर्जुमा—अल्लाह पाक है और मैं अल्लाह की

हम्द बयान करता हूं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है और गुनाह से फेरने की और नेकी पर लगाने की ताक़त बस अल्लाह ही को है। —मिश्कात (इब्ने माजा)

90. जब क़ुरबानी करे तो जानवर को क़िब्ला रूख़ लिटा कर यह दुआ पढ़े

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ عَلٰی مِلَّةِ اِبْرَاهِیْمَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ○ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۔ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ عَنْ

इन्नी वज्जहतु वज्हि–य लिल्लज़ी फ़–त–रस्समावाति वल अर–ज़ अला मिल्लतिइब्राही–म हनीफ़ंव व मा अना मिनल मुश्रिकीन इन–न सलाती व नुसुकी व मह्या–य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आ़ लमीन॰ ला शरी–क लहू व बि ज़ालि–क उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन अल्लाहुम–म मिन–क व ल–क अन॰

तर्जुमा—मैंने उस ज़ात की तरफ़ अपना रूख़ मोड़ा, जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया, इस हाल में कि मैं इब्राहीम हनीफ़ के दीन पर हूं और मुश्रिकों में से मैं नहीं हूं। बेशक मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा मरना और जीना सब अल्लाह के लिए है जो रब्बुल आ़लमीन है, जिसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं फ़रमांबरदारों में से

हूं। ऐ अल्लाह ! यह क़ुर्बानी तेरी तौफ़ीक़ से है और तेरे ही लिए है।

'अन' के बाद उसका नाम ले, जिसकी तरफ़ से ज़िब्ह कर रहा हो और अगर अपनी तरफ़ से ज़िब्ह कर रहा हो तो अपना नाम ले। इसके बाद बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अक्बर कह कर ज़िब्ह कर ले। —मिश्कात
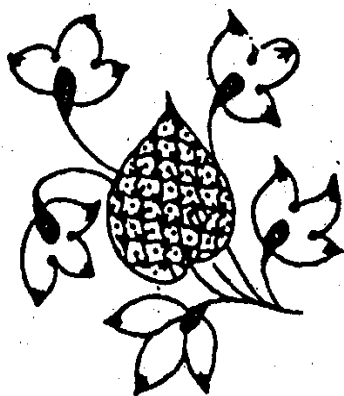
91. जब किसी मुसलमान से मुलाक़ात हो तो यों सलाम कहे

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाह०

तर्जुमा—तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत।

92. इसके जवाब में दूसरा मुसलमान यों कहे

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

व अ़लैकुमुस्सलामु व रह्तुल्लाह०

तर्जुमा—और तुम पर (भी) सलामती और अल्लाह की रहमत हो।

अगर लफ़्ज़ 'वरहमतुल्लाह' न बढ़ाया जाए तो सलाम और सलाम का जवाब अदा हो जाता है, मगर जब मुनासिब लफ़्ज़ बढ़ा दिए जाएं तो सवाब बढ़ जाएगा।

एक बार एक शख़्स रसूल अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आया और उसने 'अस्सलामु अ़लैकुम' कहा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसका जवाब दिया और फ़रमाया, इसको दस नेकियां (सवाब में) मिलीं। फिर दूसरा शख़्स आया, उसने 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि' कहा। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब देकर फ़रमाया, इसको बीस नेकियां मिलीं। फिर एक शख़्स आया और उसने 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व ब–र–कातुहू' कहा। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसका जवाब

देकर फ़रमाया, इसको तीस नेकियां मिलीं। फिर चौथा शख़्स आया, उसने कहा, 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व ब–रकातुहू व मग़्फ़ि–र–तुहू।' उसका जवाब देकर आपने इर्शाद फ़रमाया कि इसको चालीस नेकियां मिलीं। फिर एक उसूल के तौर पर इर्शाद फ़रमाया कि इसी तरह फ़ज़ाइल बढ़ते हैं।

—अबू दाऊद, व मिश्कात

फ़ायदा—सलाम करने वाला, जितने लफ़्ज़ कहे, कम से कम उतने लफ़्ज़ों में जवाब देना चाहिए और अगर उसके लफ़्ज़ों में ज़्यादा दुआ़ का इज़ाफ़ा कर दे, तो यह बहुत ही बेहतर है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है—

فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا ؕ

फहय्यू बि अहस–न मिन्हा औ रूद्दूहा०

93. अगर कोई मुसलमान सलाम भेजे तो जवाब में यों कहे

وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ (حصن حصين)

व अलैहिस्सलामु व रह्मतुल्लाहि व ब–र–कातुहू०

तर्जुमा—उस पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो और उसकी बरकतें नाज़िल हों।

—हिस्न

या सलाम लाने वाले को ख़िताब कर के यों कहे

وَعَلَيْكَ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ

व अ़लै–क व अ़लैहिस्सलामु०

तर्जुमा—तुम पर और उस पर सलामती हो।

फ़ायदा—सलाम के जवाब के साथ सलाम करने वाले से मुसाफ़ा भी करे।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो दो मुसलमान आपस में मुलाक़ात करके मुसाफ़ा करते हैं तो अलग होने से पहले उनके गुनाह (छोटे–छोटे) माफ़ हो जाते हैं। —तिर्मिज़ी

अबूदाऊद शरीफ़ की रिवायत में यों है कि जब दो मुसलमान मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़ा करें और अल्लाह की हम्द बयान करें और मग़्फ़िरत की दुआ़ करें तो उनकी मग़्फ़िरत कर दी जाती है।

—मिश्कात

94. जब छींक आये तो यों कहे

الحمد لله

अल हम्दु लिल्लाह०

तर्जुमा—सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।

इसको सुनकर दूसरा मुसलमान यों कहे

يرحمك الله

यर्हमुकल्लाह०

तर्जुमा—अल्लाह तुम पर रहम करे।

95. इसके जवाब में छींकने वाला यों कहे

يهديكم الله ويصلح بالكم (مشكوة عن البخاري)

यह्दीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम०

तर्जुमा—अल्लाह तुमको हिदायत पर रखे और तुम्हारा हाल संवार दे। —मिश्कात

जिसे छींक आती हो अगर वह औरत हो, तो जवाब देने वाला–'यर्हमुकिल्लाह' 'क' पर 'इ' की मात्रा के साथ कहे।

फ़ायदा—अगर छींकने वाला 'अल् हम्दु लिल्लाह' न कहे तो उसके लिए यर्हमुकल्लाह' कहना वाजिब नहीं है और अगर 'अल्–हम्दु लिल्लाह' कहे तो वाजिब है।

फ़ायदा—छींकने वाले को जुकाम हो या और कोई तक्लीफ़ हो, जिससे छींके आती ही चली जाएं, तो दो–तीन बार के बाद जवाब देना ज़रूरी नहीं। —मिश्कात

96. बद-फ़ाली लेना

किसी चीज़ या किसी हालत को देखकर हरगिज़ बद-फ़ाली न ले, उसको हदीस शरीफ़ में शिर्क फ़रमाया गया है। —हिस्ने हसीन

97. अगर ख़ामख़ाह बे-इख़्तियार बद-फ़ाली का ख़्याल आ जाए तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ لَا يَاْتِيْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا يَذْهَبُ بِالسَّيِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ ؕ

अल्लाहुम-म ला याती बिल-ह-स-नाति इल्ला अन-त व ला यज़्हबु बिस्सय्यिआति इल्ला अन-त व ला हौ-ल-व ला क़ुव्वत इल्ला बि-क०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! भालाइय्यों को आप ही वजूद देने वाले हैं और बद-हालियों को सिर्फ़

आप ही दूर करते हैं, बुराई से बचाने और नेकी पर लगाने की ताक़त सिर्फ़ आप ही को है।

98. क़र्ज़ अदा करने की दुआए

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ ـــــــ (مشكوٰة)

अल्लाहुम–मक्फ़िनी बिहलालि–क अ़न हरामि–क व अग़्नि नी–बि फ़ज़्लि–क अ़म–मन सिवा–क०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! हराम से बचाते हुए अपने हलाल के ज़रिए तू मेरी किफ़ायत फ़रमा और अपने फ़ज़्ल के ज़रिए तू मुझे अपने ग़ैर से बे–नियाज़ फ़रमा दे। —मिश्कात

ये कलिमे हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को सिखाये थे। जब उनसे एक आदमी ने अपनी माली मजबूरियों का ज़िक्र किया, तो फ़रमाया, क्या मैं तुमको वे कलिमे न बता दूं, जो मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सिखाये थे, अगर बड़े पहाड़ के बराबर भी तुम पर क़र्ज़ होगा, तो अल्लाह तआ़ला अदा फ़रमा देंगे, इसके बाद यही दुआ़ बतायी, जो ऊपर लिखी है। —तिर्मिज़ी

क़र्ज़ अदा करने की दूसरी दुआ़

हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे बड़ी–बड़ी चिन्ताओं ने और बड़े–बड़े क़र्ज़ों ने पकड़ लिया है।

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या तुमको मैं ऐसे लफ़्ज़ न बता दूं जिनको कहने से अल्लाह तुम्हारी चिन्ताओं को दूर कर देगा और तुम्हारे कर्ज़ को अदा फ़रमा देगा। उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सुबह व शाम यह पढ़ा करो—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ

अल्लाहुम–म इन्नी अऊज़ु बि–क मिनल हम्मि वल हुज़्नि व अऊज़ु बि–क मिनल अ़िज्ज़ि वल कस्लि व अऊज़ू बि–क मिनल बुख़्लि वल जुब्नि व अऊज़ुबि–क मिन ग–ल–ब तिद्दैनि व

कहर्रिर्रिजालि॰

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं फ़िक्रमंदी से और रंज से और तेरी पनाह चाहता हूं बेबस हो जाने से और सुस्ती के आने से और तेरी पनाह चाहता हूं कंजूसी से और बुज़दिली से और तेरी पनाह चाहता हूं क़र्ज़ के ग़लबे से और लोगों की ज़ोरावरी से।

उस आदमी का कहना है कि मैंने उस पर अमल किया तो अल्लाह पाक ने मेरी चिंता (भी) दूर कर दी और क़र्ज़ भी अदा फ़रमा दिया।

—अबूदाऊद

99. दुआ़—ए—सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अ़न्हु

से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार यों है:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْٓءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْٓءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّاۤ اَنْتَ — (مشكوة)

अल्लाहुम–म अन–त रब्बी ला इला–ह इल्ला अन–त ख़लक़्तनी व अना अब्दु–क व अना अला अहदि–क व वअ्दि–क मस्ततअ्तु अअूज़ु बि–क मिन शर्रि मा सनअ्तु अबूउ ल–क बिनिअ्मति–क अलय–य व अबूउ बि ज़म्बी फ़ग़्फ़िर ली फ़ इन–नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू–ब इल्ला अन–त०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तूने मुझे पैदा फ़रमाया और मैं तेरा बन्दा हूं और तेरे अहद पर और तेरे वायदे पर क़ायम हूं, जहां तक मुझसे हो सके। मैंने जो गुनाह किये, उनकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं, मैं तेरी नेमतों का इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का भी इक़रार करता हूं, इसलिए मुझे बख़्श दे, क्योंकि तेरे अलावा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। —मिश्कात

जिसने सच्चे दिल से दिन में ये लफ़्ज़ कहे और फिर उसी दिन शाम होने से पहले मर गया, तो जन्नतियों में से होगा और जिसने सच्चे दिल से ये लफ़्ज़ रात को कहे और फिर सुबह होने से पहले मर गया, तो जन्नतियों में से होगा।

100. हाजत की नमाज़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसे अल्लाह से कोई हाजत हो या किसी बन्दे से कोई हाजत हो, तो वुज़ू करे और अच्छी तरह वुज़ू करके फिर दो रक्अतें पढ़कर अल्लाह की तारीफ़ करे और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़े और फिर अल्लाह से यों दुआ मांगे—

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ اَسْئَلُكَ
مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ
كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا
اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ
رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ (ترمذی، ابن ماجہ)

ला इला–ह इल्लल्लाहुल हलीमुलकरीमु सुब्हानल्लाहि रब्बिल अर्शिल अज़ीम वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ–ल–मी–न असअलुक मूजिबाति रहमति–क व अज़ाइ–म मग्फ़ि–र ति–क वल ग़नी–म–त मिन कुल्लि बिर्रिवंवस्सला–म–त मिन कुल्लि इस्मिन ला तदअ़ ली ज़म्बन इल्ला ग़फ़र–तहू व ला हम्मन इल्ला फ़र्रज–तहू व ला हा–ज–तन हि–य ल–क रिज़न इल्ला क़ ज़ै–त–हा या अर्हमर्राहिमीन०

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, जो हलीम व करीम है। अल्लाह पाक है जो बड़े अर्श का रब है और सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तेरी रहमत की वाजिब करने वाली चीज़ों का और उन चीज़ों का सवाल करता हूं जो तेरी मग्फ़िरत को ज़रूरी कर दें और हर भलाई में अपना हिस्सा और हर गुनाह से सलामती चाहता हूं, ऐ

सबसे बड़े रहम करने वाले ! मेरा कोई गुनाह बख़्शे बग़ैर और कोई रंज दूर किये बग़ैर और कोई हाजत, जो तुझे पसंद हो पूरी किये बग़ैर न छोड़। —तिर्मिज़ी, इब्ने माजा

101. इस्तिख़ारे की दुआ़

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम को इस्तिख़ारा इस तरह (एहतिमाम से) सिखाते थे, जैसे क़ुरआन शरीफ़ की सूरः सिखाते थे और यों इर्शाद फ़रमाया करते थे कि जब तुम्हें कोई काम हो, तो दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़कर यह दुआ़ करो—

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ
وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ
وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ

كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَمَعَاشِىْ
وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ فَاقْدُرْهُ لِىْ وَيَسِّرْهُ لِىْ ثُمَّ بَارِكْ لِىْ فِيْهِ وَ
اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّىْ فِىْ دِيْنِىْ وَمَعَاشِىْ
وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ فَاصْرِفْهُ عَنِّىْ وَاصْرِفْنِىْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِىَ
الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِىْ بِهٖ ؕ

अल्लाहुम-म इन्नी अस्तख़ी रू-क बि अिल्मि-क व अस्तक़्दिरू-क बि कुदरति-क व अस्अलु-क मिन फ़ज़्लि-कल अजीमि फ़इन-न-क तक़्दिरू व ला अक़्दिरू-व तअ्लमु व ला अअ्लमु व अन-त अल्लामुल ग़ुयूबि अल्लाहुम-म इन कुन-त तअ्लमु अन--न हाज़ल अमर ख़ैरूल्ली फ़ी दीनी व मआ़शी --व आक़िबति अम्री फ़क़्दिरहु ली व यस्सिरहु ली सुम-म बारिक ली फ़ीहि व इन कुन-त तअ्लमु अन-न हाज़ल

अम्–र शर्रुल–ली फ़ी दीनी व मआशी व आक़िबति अम्री फ़सरिफ़्हु अन्नी वस्रिफ़्नी अन्हु वक़्दिर लि–यल ख़ै–र हैसु का–न सुम म अर्ज़िनी बिही०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मैं तेरे इल्म के ज़रिए तुझसे भलाई मांगता हूं और तेरी कुदरत के ज़रिए तुझसे कुदरत तलब करता हूं और तेरे बड़े फ़ज़्ल का तुझसे सवाल करता हूं। क्योंकि बेशक तुझे कुदरत है और मुझे कुदरत नहीं और तू जानता है, और मैं नहीं जानता और तू ग़ैबों को ख़ूब जानने वाला है। ऐ अल्लाह ! अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरी दुनिया और आख़िरत में बेहतर है, तो तू उसको मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा, फिर मेरे लिए उसमें बरकत फ़रमा और अगर तेरे इल्म में मेरे लिए यह काम मेरी दुनिया व आख़िरत में बुरा है, तो उसको मुझसे

और मुझको उससे दूर फ़रमा और मेरे लिए भलाई मुकद्दर फ़रमा, जहां कहीं भी हो, फिर उस पर मुझे राज़ी फ़रमा।

102. जब किसी मरीज़ की बीमार पुर्सी करे तो उससे यों कहे

لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ——— (بخاری)

ला बअ्-स तहूरुन इन शाअल्लाहु०

तर्जुमा—कुछ हरज नहीं इनशा अल्लाह ! यह बीमारी तुमको गुनाहों से पाक करेगी।

—बुख़ारी

और सात बार उसके शिफ़ा पाने को यों दुआ करे

أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّشْفِيَكَ

अस् अलुल्ला–हल अज़ी–म रब्बल अर्शिल अज़ीमि अंय्युशिफ़–य–क०

तर्जुमा—मैं अल्लाह से सवाल करता हूं जो बड़ा है और बड़े अर्श का रब है कि मुझे शिफ़ा दे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि सात मर्तबा उसके पढ़ने से मरीज़ को शिफ़ा होगी, हां, अगर उसकी मौत ही आ गयी हो, तो दूसरी बात है। —मिश्कात

103. कोई मुसीबत पहुंचे, (अगरचे कांटा ही लग जाए) तो यह पढ़े

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ اَللّٰهُمَّ اٰجِرْنِیْ فِیْ مُصِيْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَيْرًا مِّنْهَا ـــ (مسلم)

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन अल्लाहुम–म अजिर्नी फ़ी मुसीबती व अख़्लिफ़ ली ख़ैरम मिन्हा०

तर्जुमा—बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और हम अल्लाह ही की तरफ़ लौटने वाले हैं ऐ अल्लाह ! मेरी मुसीबत में अज्र दे और उसके बदले मुझे इससे अच्छा बदला इनायत कर।

–मुस्लिम

104. बदन में किसी जगह तक्लीफ़ हो या फ़ोड़ा–फुंसी हो तो यह पढ़े

या घाव हो तो शहादत की उंगली को मुंह

के लुआब में भर कर ज़मीन पर रख दे और फिर उठाकर तक्लीफ़ की जगह पर फेरते हुए यह पढ़े—

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ أَرْضِنَا بِرِيْقَةِ بَعْضِنَا لِيُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا ؕ ——— (بخاری و مسلم)

बिस्मिल्लाहि तुर्बतु अर्ज़िना बिरीक़ति बअ्ज़िना लि युश्फ़ा सक़ीमुना बिइज़्नि रब्बिना०

तर्जुमा—मैं अल्लाह के नाम से बरकत हासिल करता हूं। यह हमारी ज़मीन की मिट्टी है जो हम में से किसी के थूक में मिली हुई है ताकि हमारी बीमारी को हमारे रब के हुक्म से शिफ़ा हो।

—बुख़ारी व मुस्लिम

अगर बदन में किसी जगह दर्द हो या कोई और तक्लीफ़ हो तो तक्लीफ़ की जगह

दाहिना हाथ रखकर तीन बार 'बिस्मिल्लाह' कहे, फिर सात बार यह पढ़े—

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ

(حصن عن مسلم)

अऊज़ु बिल्लाहि व क़ुदर तिही मिन शर्रि मा अजिदु व उहाज़िरू०

तर्जुमा—अल्लाह की ज़ात और उसकी क़ुदरत की पनाह लेता हूं उस चीज़ की बुराई से, जिसकी तक्लीफ़ पा रहा हूं और जिससे डर रहा हूं।

—हिस्न

105. हर मर्ज़ को दूर करने के लिए

हजरत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बयान है कि हममें से जब किसी को कोई तक्लीफ़

होती थी, तो हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक्लीफ़ की जगह अपना हाथ फेरते हुए यह पढ़ते थे–

اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِىْ
لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَّا يُغَادِرُ سُقْمًا ۝ (مشکوٰة)

अज़्हिबिल बअ्–स रब्बन्नासि वशिफ़ अन्त श्शाफ़ी ला शिफ़ा–अ इल्ला शिफ़उ–क शिफ़ा अल्ला युग़ादिरू सुक़्मन०

तर्जुमा—ऐ लोगों के रब ! तक्लीफ़ को दूर फ़रमा और शिफ़ा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है। तेरी शिफ़ा के अ़लावा कोई शिफ़ा नहीं है, ऐसी शिफ़ा दे जो ज़रा मर्ज़ न छोड़े। —मिश्कात

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का बयान है कि नबी–ए–अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम जब बीमार होते थे, तो मुअव्वज़ात पढ़कर अपने हाथ पर दम फ़रमाते और फिर (आगे–पीछे) सारे बदन पर हाथ फेरते थे और जिस मर्ज़ में आपकी वफ़ात हुई है, उसमें 'मुअव्वज़ात' पढ़कर मैं आपके हाथ में दम करती थी, फिर आपके इस हाथ को आपके (तमाम बदन पर) फेरती थी। —बुख़ारी व मुस्लिम

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घर में जब कोई बीमार होता था तो आप उस पर मुअ़व्वज़ात पढ़कर दम फ़रमाते थे मुअ़व्वज़ात ये हैं। —मिश्कात

1. क़ुल या अय्युहल काफ़िरून
2. क़ुल हुवल्लाहु अहद
3. क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल फ़लक़
4. क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिनास

106. बच्चे को मर्ज़ या और किसी बुराई से बचाने के लिए

أُعِيْذُكَ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ ـــــ (بخاری)

उऔज़ु–क बिकलिमातिल्लाहित्तम्माति मिन कुल्लि शैतानिवं–व हाम्मतिंव–व मिन कुल्लि ऐनिल्लाम्मतिन०

तर्जुमा—मैं तेरे लिए अल्लाह के पूरे कलिमों के वास्ते से हर शैतान और जहरीले जानवर और नुक़सान पहुंचाने वाली हर आंख से पनाह चाहता हूं। –बुख़ारी

107. मरीज़ के पढ़ने के लिए

रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने फ़रमाया कि जो मुसलमान मर्ज़ की हालत में (अल्लाह तआ़ला को इन लफ़्ज़ों में) चालीस बार पुकारे।

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

ला इला–ह इल्ला अन–त सुब्हा–न–क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०

तर्जुमा—तेरे सिवा कोई माबूद नहीं (ऐ अल्लाह!) तू पाक है, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया, और फिर उसी मर्ज़ में मर जाए, तो उसे शहीद का सवाब दिया जाएगा और अच्छा हो गया, तो इस हाल में अच्छा होगा कि उसके सब गुनाह माफ़ हो चुके होंगे। —मुस्तदरक

एक दूसरी हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

कि जिसने अपने मर्ज़ में यह पढ़ा—

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ
وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला इला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू ला इला ह इल्लल्लाहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु-ला इलाह इल्लल्लाहु व ला हौ-ल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि०

तर्जुमा—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह तन्हा है, उसका कोई शरीक

नहीं। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए हम्द है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गुनाहों से बचाने और नेकियों पर लगाने की ताक़त अल्लाह ही को है।

अगर इसी मर्ज़ में मौत उसको आ गयी तो दोज़ख़ की आग उसे न जलाएगी।

108. जब मौत क़रीब नज़र आए तो यों दुआ़ करे

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاَلْحِقْنِیْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰی

अल्लाहुम–मग़्फ़िर ली वर्हम्नी–व अलहिक़्नी बिर्रफ़ीक़िल अअ़्ला०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे ऊपर वाले साथियों में

पहुंचा दे। —हिस्न हसीन

109. अपनी जान निकलते वक़्त यह दुआ करे

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّىْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ

अल्लाहुम–म अअिन्नी अ़ला ग़ म–रातिल मौति व स–क–रातिल मौति०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मौत की सख़्तियों के (इस मौक़े) में मेरी मदद फ़रमा।

फ़ायदा—मौत के वक़्त मरने वाले का चेहरा क़िब्ले की तरफ़ कर दिया जाए और जो मुसलमान वहां मौजूद हो, वह मरने वाले को ला इला–ह इल्लल्लाहु की तल्क़ीन करे, यानी उसके सामने बुलंद आवाज़ से कलिमा पढ़े ताकि वह सुनकर कलिमा पढ़ ले।

तंबीह—मौत के वक़्त कलिमे का पढ़ना फ़र्ज़ या वाजिब नहीं। अगर किसी ने नहीं पढ़ा तो उसके ईमान में कोई फ़र्क़ न आएगा।

हदीस शरीफ़ में है कि जिसका आख़िरी कलाम 'ला इला–ह इल्लल्लाहु, रहा वह जन्नत में दाख़िल होगा। —हिस्ने हसीन

यानी गुनाहों की वजह से सज़ा पाने से बच जाएगा और जन्नत के दाख़िले में रूकावट न रहेगी।

जान के निकलते वक़्त मौजूद लोगों में से कोई सूरः यासीन शरीफ़ पढ़ दे। (इससे जान निकलने में आसानी हो जाती है।)

110. रूह निकल जाने के बाद मय्यत की आंखें बन्द कर के यह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ وَّارْفَعْ دَرَجَتَهٗ فِي الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِيْ عَقِبِهٖ فِي الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ يَارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ وَافْسَحْ لَهٗ فِيْ قَبْرِهٖ وَنَوِّرْ لَهٗ فِيْهِ

अल्लाहुम–मग़्फ़िर लि फ़ुलानिंव वर्फ़अ् द–र–ज–त हू फ़िल महदिय्यीन वख़्लुफ़्हु फ़ी अ़–क़िबिही फ़िल ग़ाबिरीन वग़्फ़िर लना व लहू–या रब्बल आ़ ल मी न वफ़्सह लहू फ़ी क़ब्रिही व नव्विर लहू फ़ीहि०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! इसको बख़्श दे और (हिदायत पाने वालों में शामिल फ़रमा कर) इसका दर्जा बुलंद फ़रमा और उसके वारिसों में तू उसका ख़लीफ़ा हो जा और ऐ रब्बुल आलमीन ! हमें और इसे बख़्श दे और इसकी क़ब्र को फैला और रोशन कर दे।

यह दुआ हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूसल्मा रज़ि० की मौत के बाद उनकी आंखें बन्द फ़रमा कर पढ़ी थी और 'फ़ुलानिन' की जगह उनका नाम लिया था।

—मिश्कात (मुस्लिम)

जब कोई शख़्स किसी दूसरे मुसलमान के लिये यह दुआ पढ़े तो 'फ़ुलानिन' की जगह उसका नाम ले और नाम से पहले 'इ' वाला 'ल' लगा दे।

111. मय्यत के घराने का हर आदमी अपने लिए यों दुआ करे

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلَهُ وَاَعْقِبْنِيْ مِنْهُ عُقْبٰى حَسَنَةً

[1]अल्लाहुम–मग़्फ़िरली व लहू व अअ़्क़िबनी

---

1. यह कलिमात हर मुसीबत में पढ़ने के लिए है।

मिन्हु उक्बा ह–स–न–तन०

तर्जुमा—ऐ अल्लाह ! मुझे और इसे बख़्श दे और मुझे इसका अच्छा बदला अता फ़रमा।

—हिस्न

मय्यत को तख़्ते पर रखते हुए या जनाज़ा उठाते हुए बिस्मिल्लाह कहे। —हिस्न

जब किसी का बच्चा फ़ौत हो जाए तो 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहे और 'इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़े। ऐसा करने से अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं, मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बना दो और उसका नाम बैतुल हम्द रखो। —हिस्न (तिर्मिज़ी)

112. मय्यत को क़ब्र में रखते वक़्त यह पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ (حصن حصين)

बिस्मिल्लाहि व बिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि०

तर्जुमा—मैं इसको अल्लाह का नाम लेकर और अल्लाह की मदद के साथ और रसूलुल्लाह के मज़हब पर (क़ब्र में) रखता हूं। —हिस्न हसीन

फ़ायदा—दफ़्न के बाद क़ब्र के सिरहाने सूरः फ़ातिहा (यानी अल् हम्दु) शरीफ़ और सूरः बक़रः की शुरू की आयतें 'मुफ़्लिहून' तक पढ़ी जाएं और पैरों की तरफ़ सूरः बक़रः की आख़िरी आयतें 'आ–म–न र्रसूलु' में सूरः के ख़त्म तक पढ़ी जाएं। —मिश्कात

और थोड़ी देर क़ब्र के पास ठहर कर मय्यत के वास्ते इस्तिग़्फ़ार करें और अल्लाह तआला से इसके लिए दुआ करें कि उसे (फ़रिश्तों के सवाल जवाब में) साबित क़दम रखे। —हिस्न

113. जब क़ब्रस्तान में जाए तो यह पढ़े

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَآ اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ

अस्सलामु अलैकुम या अह्लल क़ुबरि यग़्फ़िरूल्लाहु लना व लकुम अन्तुम स–ल–फ़ुना व नहुन बिल–अ–स–रि०

तर्जुमा—ऐ क़ब्र वालों ! तुम पर सलाम हो, हमें और तुम्हें अल्लाह बख़्शे, तुम हम से पहले चले गये और हम बाद में आने वाले हैं।

या यह पढ़े

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ نَسْئَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ

अस्सलामु अ़लैकुम अह्ल–दियारि मिनल मुअ् मिनी–न वल मुस्लिमी–न व इन्ना इन शाअल्लाहु बिकुम लाहिक़ून नस्अलुल्ला–ह लना व लकुमुल आ़फ़ि–य–त०

तर्जुमा—ऐ यहां के रहने वाले मोमिनों ! और मुसलमानों ! तुम पर सलाम हो और हम (भी) इनशा अल्लाह तुम्हारे पास पहुंचने वाले हैं अपने लिए और तुम्हारे लिए आ़फ़ियत का सवाल करते हैं। —मुस्लिम

114. किसी का पूछना करे, तो सलाम के बार यों समझावे

اِنَّ لِلّٰهِ مَآ اَخَذَ وَلَهٗ مَآ اَعْطٰى وَكُلٌّ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ — (بخاری ومسلم)

इन–न लिल्लाहि मा अ–ख़–ज़ व लहू मा अअ्ता व कुल्लुन अि़न–द हू बि अ–ज–लिम मुसम्मन फ़ल् तस्बिर वल् तह्तसिब०

तर्जुमा—बेशक जो अल्लाह ने ले लिया, वह उसी का है और जो उसने दे दिया, वह उसी का है और हर एक का उसके पास मुक़र्रर वक़्त है (जो बे–सब्री या किसी तद्बीर से बदल नहीं सकता,) इसलिए सब्र करना चाहिए और सवाब की उम्मीद रखनी चाहिए। —बुख़ारी व मुस्लिम

115. हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बिच्छू ने काटा

हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नमाज़ की हालत में एक बार बिच्छू ने डस लिया, आपने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, बिच्छू पर अल्लाह की लानत हो, न नमाज़ पढ़ने वाले को छोड़ता है, न किसी दूसरे को। इसके बाद आपने पानी और नमक मंगवाया और पानी में नमक घोलकर डसने की जगह पर फेरते रहे और सूरः 'क़ुल या अय्युहल काफ़िरून' और सूरः 'क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिल फ़लक़' और क़ुल अऊ़ज़ुबिरब्बिन्नासि' पढ़ते रहे। —हिस्न

116. जब आग लगती देखे

तो 'अल्लाहु अक्बर' के ज़रिए बुझा दे यानी 'अल्लाहु अक्बर' कहे, इससे वह आग बुझ जाएगी। —अबूयअ़ला व इब्नुस्सन्न

साहिबे हिस्ने हसीन रह० फ़रमाते हैं कि ये

आज़मायी हुई चीज़ है।

117. ख़ास दुआएं

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि

अपने एक मल्फ़ूज़ में इर्शाद फ़रमाते हैं, 'दुआ़ की हक़ीक़त है अपनी ज़रूरतों को बुलंद बारगाह में पेश करना, पस जितनी बुलंद वह बारगाह है, उतना ही दुआ़ के वक़्त दिल को मुतवज्जह करना चाहिए और पूरे यक़ीन के साथ दुआ़ करनी चाहिए कि ज़रूर क़ुबूल होगी, क्योंकि जिससे मांगा जा रहा है, वह बहुत सख़ी और करीम है, अपने बन्दों पर रहीम है, ज़मीन व आसमान के ख़ज़ाने सब उसी के क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है।

118. दुआ मांगने का तरीका

दुआ मांगने वाला वुज़ू कर के, फिर किब्ले की तरफ़ मुंह कर के दो ज़ानू बैठे, जैसे अत्तहिय्यात में बैठते है, पालती मार कर हरगिज़ न बैठे, इसलिए कि यह सख़्त बे–अदबी है, मगर मजबूरी में इजाज़त है।

अल्लाह तआला की अज़्मत व क़ुदरत का ध्यान जमा कर दुआ मांगे, हाथों को दुआ के लिए उठाकर सबसे पहले दरूद शरीफ़ पढ़े, क्योंकि हदीस शरीफ़ में आता है कि जो दुआ बग़ैर दुरूद शरीफ़ के मांगी जाती है, वह ज़मीन और आसमान के दर्मियान लटकी रहती है और क़ुबूल नहीं होती। इसके बाद अल्लाह तआला शानुहू की तारीफ़ बयान करने में जितने अच्छे कलिमात कह सकता हो, कह डाले। इसके बाद इस्मे

आज़म और अस्मा–ए–हुस्ना, जिन के बारे में सही हदीस में आता है कि उनके पढ़ने के बाद जो दुआ़ मांगी जाएगी, वह रद्द नहीं की जाएगी, उन अस्मा में से एक–दो या उससे ज़्यादा कह कर दुआ़ के लफ़्ज़ अदा करे। अपनी ज़रूरत हाकिमों के हाकिम, सबसे बड़े रहम करने वाले अल्लाह के सामने पेश करे, रो–रो कर, गिड़–गिड़ा कर अपनी दुआ़ को क़ुबुल कराए और दुआ़ में सब कुछ मांग लेने के बाद आख़िर में दरूद शरीफ़ पढ़े।

हुज़ूरे अक़्दस जनाबे मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वास्ते से दुआ़ मांगना सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल है और आपका वास्ता दुआ़ की क़ुबूलियत का सबसे बड़ा ज़रिया है। किसी ने ख़ूब कहा है—

تُسَهِّلْ يَا اِلٰهِيْ كُلَّ صَعْبٍ
بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ سَهِّلْ

तुसह्हिल या इलाही कुल–ल सअ्बिन बिहुर्मति सय्यिदिल अब्रारि सह्हिल

यानी ऐ अल्लाह ! मेरी सारी मुसीबतें और तक्लीफ़ें सय्यिदुल अब्रार यानी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तुफ़ैल से दूर फ़रमा दे।

दुआ़ की क़ुबूलियत में वक़्त और दुआ़ की जगह को भी काफ़ी दख़्ल है, जैसे–अर्फ़े का दिन और महीनों में रमज़ान का महीना, हफ़्ते में जुमे का दिन और रात में सेहर का वक़्त।

दुआ़ मांग लेने के बाद अपने दोनों हाथों को मुंह पर फेर ले और इस पर पूरा यक़ीन करे

कि दुआ ज़रूर कुबूल होगी और अगर दुआ की कुबूलियत का असर नज़र न आए, तो तंग और रंजीदा न हो, बराबर मागता रहे और यह ख़्याल करे कि अब तक कुबूल न होने में कोई बेहतरी मुक़द्दर है और आख़िरत में उसका बहुत बड़ा सवाब का ज़खीरा मिलेगा।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ الٓمّٓ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۝ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَیِّ الْقَیُّوْمِ ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ
سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝ یَآ اَحَدُ الصَّمَدُ
الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ ۝ وَلَمْ یُوْلَدْ ۝ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝
یَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ۝ ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا
وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَتُبْ
عَلَیْنَآ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ۝ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ

وَتَجَاوَزْ عَنْ مَّا تَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ اَللّٰهُمَّ

إِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنَّا اَللّٰهُمَّ مُصَرِّفَ

الْقُلُوْبِ صَرِّفْ قُلُوْبَنَا عَلٰى طَاعَتِكَ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ

ثَبِّتْ قُلُوْبَنَا عَلٰى دِيْنِكَ اَللّٰهُمَّ إِنَّ قُلُوْبَنَا وَنَوَاصِيَنَا وَجَوَارِحَنَا

بِيَدِكَ لَمْ تُمَلِّكْنَا مِنْهَا شَيْئًا فَإِذَا فَعَلْتَ ذٰلِكَ بِنَا فَكُنْ أَنْتَ

وَلِيَّنَا وَاهْدِنَا إِلٰى سَوَآءِ السَّبِيْلِ اَللّٰهُمَّ أَرِنَا الْحَقَّ حَقًّا وَّارْزُقْنَا

اِتِّبَاعَهٗ وَأَرِنَا الْبَاطِلَ بَاطِلًا وَّارْزُقْنَا اجْتِنَابَهٗ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا

حُبَّكَ وَحُبَّ رَسُوْلِكَ وَحُبَّ مَنْ يَّنْفَعُنَا حُبُّهٗ عِنْدَكَ

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ نَسْتَغِيْثُ نَسْتَغْفِرُكَ رَبَّنَا وَ

نَسْئَلُكَ التَّوْبَةَ وَأَصْلِحْ لَنَا شَأْنَنَا كُلَّهٗ وَلَا تَكِلْنَا إِلٰى أَنْفُسِنَا

طَرْفَةَ عَيْنٍ فَإِنَّكَ إِنْ تَكِلْنَا إِلٰى أَنْفُسِنَا تَكِلْنَا إِلٰى ضَعْفٍ

وَّعَوْرَةٍ وَّذَنْبٍ وَّخَطِيْئَةٍ اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ

سَهْلًا وَّأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ سَهْلًا إِذَا شِئْتَ لَآ إِلٰهَ

اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ نَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ
رَحْمَتِكَ وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ
وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ
يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ
لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ اِلَيْكَ رَبِّ
فَحَبِّبْنَا وَفِيْ اَنْفُسِنَا لَكَ رَبِّ فَذَلِّلْنَا وَفِيْ اَعْيُنِ النَّاسِ
فَعَظِّمْنَا وَمِنْ سَيِّئِ الْاَخْلَاقِ فَجَنِّبْنَا وَعَلٰى صَالِحِ
الْاَخْلَاقِ فَقَوِّمْنَا وَعَلَى الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِيْمِ فَثَبِّتْنَا وَعَلٰى
الْاَعْدَآءِ اَعْدَآئِكَ اَعْدَآءِ الْاِسْلَامِ فَانْصُرْنَا اَللّٰهُمَّ
انْصُرْنَا وَلَا تَنْصُرْ عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ امْكُرْ لَنَا وَلَا تَمْكُرْ عَلَيْنَا
اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَنْقُصْنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لَّا يَرْحَمُنَا
اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ صُدُوْرَنَا لِلْاِسْلَامِ اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا

الْإِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِيْ قُلُوْبِنَا وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِيْنَ ○

अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु० अलिफ़–लाम–मीम० अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्युम व अ़–न तिल वुजूहु लिल हय्यिल क़य्यूमि ला इला–ह इल्ला अन–त सुब्हा–न–क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन या अ–ह–दस्स–म–दल्लज़ी लम यलिद व लम यूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद या अर्हमर्राहिमीन ज़लम्ना अन्फ़ु–स–ना व इल्लम तग़्फ़िरलना व तर्हम्ना ल–न कूनन्न मिनल ख़ासिरीन० रब्बनग़्फ़िर लना व तुब अलैना इन्न–क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम रब्बिग़्फ़िर वर्हम व तजावज़ अ़म मा तअ़्लमु इन्न–क

अन्तल अअज़्ज़ुल अक्रमु अल्लाहुम–म इन्न–क अफुव्वुन करीमुन तुहिब्बुल अफ़्–व फ़अफ़ु अन्ना अल्लाहुम–म मुसर्रिफ़ल कुलूबि सर्रिफ़ क़ुलूबना अ़ला ताअ़ति–क या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि सब्बित क़ुलू–बना अ़ला दीनि–क अल्लाहुम–म इन–न कुलूबना व नवासि–यना व जवारिहना बियदि–क लम तुमल्लिक्ना मिन्हा शैआ फ़ इज़ा फ़अल–त ज़ालि–क बिना फ़कुन अन–त वलीय्यना वह्दिना इला सवाइस्सबीलि अल्लाहुम–म अरि नल हक्–क हक़्क़ंव वर्जुक़्ना इत्तिबा–अ़–हु व अरिनल बातिं–ल बातिलंव वर्ज़ुक्ना इज्तिना–बहू अल्लाहुम–मर्ज़ुक़्ना हुब्ब–क व हुब–ब रसूलि–क व हुब–ब मंय्यन्फ़अुना हुब्बुहु अ़िन्द–क या हय्यु या क़य्यूमु बिरह्मति–क नस्तगीसु नस्तग़्फ़िरू–क रब्बना व नसअलु–क त्तौ–ब–त व असलिह लना

शानना कुल्लहू व ला तकिल्ना इला अन्फ़ुसिना तर्फ़ त ऐ निन फ़ इन्न क इन तकिल्ना इला अन्फ़ुसिना तकिल्ना इला ज़अ्फ़िंव व औरतिंव व ज़म्बिंत ख़ती अलिन० अल्लाहुम म ला सह्ल इल्ला मा जअ़ल त हू सहलंव व अन त तजअ़लुल हज़ न सहलन इज़ा शिअ्त ला इला ह इल्लल्लाहुल हली मुल करीमु सुब्हानल्लाहि रब्बिल अर्शिल अ़ज़ीम० अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन नस् अलु क मूजिबाति रह्मति क व अज़ाइ म मग़्फ़ि र ति क वल ग़नीम त मिन कुल्लिबिर्रिंव्वस्सलामत मिन कुल्लि इस्मिन ला तदअ् ली ज़म्बन इल्ला ग़फ़र्त हू या अर्हमर्रा हिमीन व ला हम्मन इल्ला फ़र्रज तहू व ला हाजतन हि य ल क रिज़न इल्ला क़ज़ै तहा या अरहमर्राहि मीन इलैक रब्बि फ़हब्बिब्ना व फ़ी अन्फ़ुसिना ल क रब्बि फ़ज़ललिल्ना व फ़ी

अअ्ंयुनिन्नासि फ़ अ़ज़िज़्म्ना व मिन सय्यिइल अख़्लाकि फ़ जन्निब्ना व अ़ला सालिहिल अख़्लाक़ि फ़ क़बिब्व्म्ना व अलस्सिरातिल मुस्तक़ीमि फ़सब्बित्ना व अ़लल अअ्दाइ अअ्दाइ क अअ्दाइल इस्लामि फ़न्सुर्ना अल्लाहुम्मन्सुर्ना व ला तन्सुर अ़लैना०

अल्लाहुम्मम्कुर लना व ला तम्कुर अ़लैना अल्लाहुम म ज़िदना व ला तन्कुस्ना व ला तुसल्लित अ़लैना मल्ला यर्हमुना अल्लाहुम मशरह सुदूरना लिल इस्लामि अल्लाहुम म हब्बिब इलैनल ईमान व ज़य्यिन हु फ़ी क़ुलू बिना व कर्रिह इलैनल कुफ़् र वल फ़ुसू क़ वल् ऊ़िस्या न अल्लाहुम्मज अ़ल्ना मिनर्राशिदीन०

तर्जुमा—अल्लाह, नहीं है कोई माबूद, मगर वह

ज़िंदा है, कायम रहने वाला है। अलिफ़ लाम मीम, अल्लाह ! नहीं है कोई माबूद, मगर वह ज़िंदा रहने वाला कायम रहने वाला है और उसके सामने मुंह नीचे हो जाएंगे। नहीं है कोई माबूद, मगर तेरी पाक ज़ात। बेशक मैं (ही) ज़ालिमों में से हूं, ऐ अकेले ! बे नियाज़, जो न किसी का बाप है और न जिसका कोई बाप और न जिसका कोई कुन्बा, बिरादरी वाला, ऐ बड़े रहम करने वाले ! हम अपने ऊपर जुल्म कर बैठे और अब अगर तू हमें न बख़्शे और हम पर रहम न खाये तो हम ज़रूर घाटा पाने वालों में हो जाएंगे। ऐ हमारे रब ! हमारी बख़्शिश फ़रमा और तौबा कुबूल फ़रमा। बेशक तू ही तौबा कुबूल करने वाला रहीम है। ऐ रब ! बख़्श दे और रहम फ़रमा और जो तू जानता है, उससे दर गुज़र फ़रमा। बेशक तू ही बड़ी इज़्ज़त

वाला और सख़ी है। ऐ अल्लाह ! बेशक तू माफ़ करने वाला करीम है, माफ़ी को पसंद करता है, पस हमें भी माफ़ फ़रमा, ऐ अल्लाह ऐ दिलों के फेरने वाले, हमारे दिलों को अपनी इताअ़त की तरफ़ फेर दे, ऐ दिलों को पलटने वाले ! हमारे दिलों को अपने दीन पर जमा दें। ऐ अल्लाह ! बेशक हमारे दिल, हमारी परेशानियां और हमारे बदन के हिस्से तेरे क़ब्ज़े में हैं, तूने हमें उन पर इख़्तियार नहीं दिया। जब तूने हमारे साथ ऐसा किया है, तो तू ही हमारा मददगार बन जा और हमें सीधे रास्ते पर चला। ऐ अल्लाह ! हमें हक़ को हक़ दिखा और उस पर चलने की तौफ़ीक़ दे, और बातिल को बातिल दिखा और उस से बचने की तौफ़ीक़ दे। ऐ अल्लाह ! हमें अपनी और अपने रसूल की मुहब्बत दे और उन (लोगों) की मुहब्बत

दे, जिनकी मुहब्बत तेरे नज़दीक हमें नफ़ा दे। ऐ ज़िंदा और हमेशा रहने वाले ! हम तेरी ही रहमत के ज़रिए फ़रियाद चाहते हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! हम तुझसे मग़्फ़िरत मांगते हैं और तौबा की कुबूलियत मांगते हैं। और हमारे तमाम हालात को दुरूस्त फरमा दे और पलक झपकने के बराबर भी हमें हमारे अपने नफ़्सों के हवाले न फ़रमा, इसलिए कि अगर तूने हमें अपने नफ़्सों के हवाले किया तो हमको कमी व कोताही और गुनाह व ख़ता के हवाले कर देगा। ऐ अल्लाह ! वह काम आसान है, जिसे तू आसान कर दे और तू जब चाहता है, तो मुश्किल को भी आसान कर देता है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मगर हलीम व करीम अल्लाह की पाक ज़ात है, बड़े अर्श का रब है। सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो दुनिया का रब है।

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तेरी रहमत को वाजिब करने वाली चीज़ों का सवाल करता हूं। और उन चीज़ों का जो मग्फ़िर को ज़रूरी कर दें और हर भलाई में अपना हिस्सा और हर गुनाह से सलामती चाहता हूं।

ऐ सब से बड़े रहम करने वाले। मेरा कोई गुनाह बख़्शे बग़ैर और कोई रंज दूर किए बग़ैर और कोई ज़रूरत, जो तुझे पसंद हो, पूरी किए बग़ैर न छोड़ा। ऐ सबसे बड़े रहम करने वाले ! ऐ अल्लाह ! हमें अपना महबूब बना ले और हमें हमारी अपनी निगाह में अपने लिए ज़लील कर दे और लोगों की निगाह में हमें इज़्ज़त दे और बुरी आदतों से बचा और अच्छा आदतों पर जमा दे और सीधे रास्ते पर क़ायम रख और हमारे दुश्मानों, अपने और इस्लाम के दुश्मनों के मुक़ाबले में

हमारी मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह ! हमारी मदद फ़रमा और हमारे मुक़ाबले में आने वाले की मदद न फ़रमा।

ऐ अल्लाह ! हमारे लिए मुफ़ीद तद्बीर फ़रमा और हमारे हक़ में नुक़्सान देने वाली तद्बीर न फ़रमा। ऐ अल्लाह ! हमें बढ़ा और हमें कम न कर और ऐसों को हम पर ग़लबा न दे जो हम पर तरस न खाए। ऐ अल्लाह ! इस्लाम के लिए हमें हौसले वाला बना। ऐ अल्लाह ! हमें ईमान की मुहब्बत दे और उसको हमारे दिलों की ज़ीनत बना दे और कुफ़्र व फ़िस्क़ व फ़ुजूर से हमें नफ़रत दे। ऐ अल्लाह ! हमें नेक लोगों में कर दे।